Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ

(सूरः बकरः आयत:201)

अनुवाद : अतः जब तुम अपनी हज्ज की रस्में पूरी कर लो तो अल्लाह को उसी तरह याद करो जैसे अपने पूर्वजों को याद करते हो, या उससे भी अधिक।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 33
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

19 सफ़र, 1446-47 हिज्री कमरी, 14 ज़हूर1404 हिज्री शम्सी, 14 अगस्त 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

सहाबा से प्रेम और उनकी सांत्वना

हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास कुछ क़बाएँ (विशेष प्रकार के वस्त्र) आईं तो मेरे पिता मख़रमा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने मुझसे कहा कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास मेरे साथ चलो, उम्मीद है कि आप हमें भी देंगे। मेरे पिता दरवाज़े पर खड़े हो गए और बातें करने लगे। नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उनकी आवाज़ पहचानी और बाहर निकले। आपके पास एक क़बा थी। आप उन्हें उस क़बा की खूबियाँ दिखाने लगे और आप यह भी फ़रमाते थे कि यह मैंने तुम्हारे लिए छुपा रखी थी। यह मैंने तुम्हारे लिए छुपा रखी थी।

औरत की गवाही

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: क्या औरत की गवाही आदमी की गवाही के आधे के बराबर नहीं? उन्होंने कहा: क्यों नहीं। आपने फ़रमाया कि यह उसके अक़्ल की कमी के कारण है।

नफ़्ल के ज़रिए इंसान बहुत बड़ा दर्जा और क़ुर्ब हासिल करता है यहाँ तक कि वह अल्लाह के वलियों (मित्रों) की श्रेणी में दाख़िल हो जाता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

याद रखो कि अल्लाह से पूर्ण प्रेम नफ़्ल (स्वैच्छिक इबादत) के ज़रिए होता है। इसका नतीजा यह होता है कि अल्लाह फ़रमाता है कि फिर मैं ऐसे करीब और मोमिन बंदों की नज़र हो जाता हूँ, यानी जहाँ मेरी मर्ज़ी होती है, वहीं उनकी नज़र पड़ती है। सच्चा व्यक्ति मौत का भरोसा नहीं रखता और अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं होता।

उनके कान हो जाते हैं। यह इस बात की तरफ इशारा है कि जहाँ अल्लाह की या उसके रसूल की या उसकी किताब की तौहीन और बेइज़्ज़ती होती है, वहाँ से बेज़ार और नाराज़ होकर उठ खड़े होते हैं। वह सुन नहीं सकते और कोई ऐसी बात जो अल्लाह तआला की रज़ा और हुक्म के ख़िलाफ़ हो नहीं सुनते और ऐसी महफिलों में नहीं बैठते। ऐसा ही फ़िस्क़ व फुजूर की बातों और नापाक नज़ारों और आवाज़ों से परहेज़ करते हैं। नामहरम की आवाज़ सुनकर बुरे ख़्यालात का पैदा होना ज़िना-ए-उज़ुन (कानों का व्यभिचार) है। इसीलिए इस्लाम ने पर्दे की रस्म रखी है।

मसीह का यह कहना कि "ज़िना की नज़र से न देखो" कोई कामिल तालीम नहीं है। इसके मुक़ाबले में कामिल तालीम वह है जो गुनाह के शुरुआती अंदेशों से बचाती है। "कुल लिल मोमिनीना यगुज़ू मिन अब्सारिहिम" (सूरह नूर: 31) यानी किसी भी नज़र से न देखें, क्योंकि दिल अपने इख़्तियार में नहीं है। यह कितनी कामिल तालीम है।

फिर फ़रमाता है कि मैं उसके हाथ हो जाता हूँ। कभी-कभी इंसान हाथों से बहुत बेरहमी करता है। अल्लाह फ़रमाता है कि मोमिन के हाथ बेजा तौर पर इतिडाल से नहीं बढ़ते। वह नामहरम को हाथ नहीं लगाते।

फिर फ़रमाता है कि मैं उसकी ज़बान हो जाता हूँ। इसी पर इशारा है "मा यंतिक़ अनिल हवा" (सूरह नज्म: 4)। इसीलिए रसूलुल्ला (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जो फ़रमाया वह अल्लाह तआला

शेष पृष्ठ 12 पर

एक सच्चा मोमिन हर प्रकार की नमाज़ें यानी फर्ज़ और नफ़्ल अच्छी तरह अदा करता है। वह अपने समुदाय के हर व्यक्ति की शारीरिक इबादत की रक्षा करता है, यानी यह देखता रहता है कि उसकी संतान, उसकी पत्नी, उसके रिश्तेदार, उसके पड़ोसी और उसका पूरा समुदाय नमाज़ का पाबंद है या नहीं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-मोमिनून, आयत 10 "वल्लज़ीना हुम अला सलवातिहिम युहाफिज़ून" की तफ्सीर में फ़रमाते हैं:

यहाँ नमाज़ का शब्द जमा (बहुवचन) के रूप में आया है। इससे एक तो यह इशारा है कि वे हर प्रकार की नमाज़ें यानी फर्ज़ और नफ़्ल अच्छी तरह अदा करते हैं, और दूसरे यह बताया गया है कि वे अपने समुदाय के हर व्यक्ति की शारीरिक इबादत की रक्षा करते हैं, यानी यह देखते रहते हैं कि उनकी संतान, उनकी पत्नियाँ, उनके रिश्तेदार, उनके पड़ोसी और उनका पूरा समुदाय नमाज़ का पाबंद है या नहीं। क्योंकि जब तक पूरे परिवार, बल्कि पूरे समुदाय के अमल दुरुस्त न हों, उस वक्त तक इंसान का अपना अमल भी खतरे से बाहर नहीं रह सकता।

बहुत बार ऐसा होता है कि जब कोई व्यक्ति सुबह अपने बच्चे को नमाज़ के लिए जगाने लगता है, तो उस वक्त फौरन मोहब्बत के जज़बात उसके सामने आ जाते हैं, और वह दिल में कहता है कि "कड़ाके की सर्दी है, मैं इसे क्यों जगाऊँ? अगर नमाज़ के लिए जगाया तो इसे सर्दी लग जाएगी।" फिर जब वह अपनी पत्नी को नमाज़ के लिए जगाने लगता है, तो उस वक्त भी मोहब्बत के जज़बात उसके सामने आ जाते हैं, और वह कहता है कि "यह सारी रात बच्चे को उठाकर दूध पिलाती रही है, अब मैं इसे जगाऊँगा तो इसकी नींद खराब हो जाएगी। बेहतर है कि यह सोई रहे, नमाज़ बाद में पढ़ लेगी।"

कुल मिलाकर, कभी सख्त सर्दी और कभी सख्त गर्मी का बहाना उसके सामने आ जाता है। छह महीने उसके सामने यह सवाल रहता है कि "सख्त सर्दी है, इन दिनों में बच्चे को नमाज़ के लिए क्यों जगाऊँ? इसे सर्दी लग जाएगी।" और छह महीने उसके सामने यह सवाल रहता है कि "नाजुक और फूल जैसा बच्चा है, नमाज़ पढ़ने गया तो इसे गर्मी लग जाएगी।" फिर कभी पत्नी को जगाते वक्त यह ख्याल आ जाता है कि "यह सारी रात बच्चे को उठाए फिरती रही है, इसलिए बेहतर है कि सोई रहे, नमाज़ बाद में पढ़ लेगी।"

कदम-कदम पर जज़्बात और एहसासात उसके सामने आ जाते हैं, और इसका नतीजा यह होता है कि न तो उनकी इस्लाह होती है और न ही उसकी अपनी इस्लाह पूरी होती है। इसीलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-पाक में फ़रमाया है:

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

हे लोगो! अल्लाह तआला ने मक्का को उस दिन से हराम (पवित्र स्थान) बनाया है जिस दिन उसने आकाशों और धरती की रचना की और जिस दिन उसने सूरज और चाँद को बनाया और इन दो पहाड़ों सफा और मरवा को स्थापित किया। इसलिए जो व्यक्ति अल्लाह तआला और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसके लिए हलाल नहीं कि वह इसमें खून बहाए और न ही इसके पेड़ काटे। यह न मुझसे पहले किसी के लिए हलाल हुआ और न मेरे बाद किसी के लिए हलाल होगा। मेरे लिए यह पलभर के लिए हलाल हुआ था, फिर इसकी हरमत वैसे ही लौट आई है जैसे कल थी। तुममें से मौजूद लोग अनुपस्थित तक यह बात पहुँचा दें। जो तुमसे कहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसमें लड़ाई की थी, तो उससे कहो कि अल्लाह तआला ने इसे अपने रसूल के लिए हलाल किया था और उसने तुम्हारे लिए हलाल नहीं किया।

हे लोगो! लोगों में से अल्लाह तआला पर सबसे ज्यादा हिम्मत करने वाला वह व्यक्ति है जिसने हरम में कत्ल किया या अपने कातिल के अलावा किसी और को कत्ल किया या जमाने-जाहिलियत के खून के बदले की वजह से कत्ल किया।

फतह-ए-मक्का के दिन "केवल उन्हीं कुछ लोगों को सजा दी गई जिन्हें सजा देने के लिए हज़रत अहदियत की तरफ से स्पष्ट आदेश आ चुका था और इन अज़ली मलऊनों के अलावा हर एक दुश्मन का गुनाह माफ कर दिया गया।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

ग़ज़वा-ए-फतह-ए-मक्का के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रेरणादायक वर्णन।

मौजूदा हालात को देखते हुए दुआएँ करने और राशन जमा करने की याद दिलाना।

मुकर्रमा उम्मत-उन-नसीर निगहत साहिबा (अहलिया मुकर्रम राजा अब्दुल मालिक साहिब, अमेरिका) और मुकर्रम अल-हाज याकूब अहमद बिन अबू बकर साहिब (घाना) का ज़िक्र-ए-खैर और नमाज-ए-जनाजा-ए-ग़ाइब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 जुलाई 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जैसा कि पिछले खुत्बे में बयान हुआ था कि फ़त्ह-ए-मक्का से पहले काबा की चाबी उस्मान बिन तल्हा के पास थी। जब फ़त्ह-ए-मक्का हुई, तो उस समय हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने सकाया (पानी पिलाने का सम्मान) के साथ-साथ कुंजीदारी का सम्मान भी प्राप्त करने की दरख्वास्त की, यानी कि अब चाबी उन्हें दे दी जाए। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काबा से निकलते समय उस्मान बिन तल्हा को बुलाया और उन्हें चाबी वापस कर दी और फ़रमाया:

"आज नेकी और वफ़ा का दिन है।"उस समय उस्मान बिन तल्हा मुसलमान हो चुके थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्यों कहा? इसकी तफ़सील इस तरह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिज्रत से पहले एक बार उस्मान बिन तल्हा से काबा की चाबी माँगी थी, तो उसने जवाब में आपको बुरा-भला कहा और बेहद गंदी ज़ुबान इस्तेमाल की थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय बेहद तहमुल से काम लिया और फ़रमाया:

"ऐ उस्मान! याद रखो, यह चाबी किसी न किसी दिन मेरे हाथ में आएगी, और मैं इसे अपनी मर्ज़ी से जिसे चाहूँगा, दूँगा।"

उस्मान ने उस समय यह जवाब दिया था कि अगर ऐसा वक्त आया, तो वह कुरैश की हलाकत और ज़िल्लत का वक्त होगा। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"नहीं, बल्कि उस दिन कुरैश की आबादी और इज़्ज़त-ओ-तकरीम होगी।"

यह सारी ज़्यादतियाँ जो आपसे की गई थीं, उस समय आपको याद थीं, लेकिन इसके बावजूद आपने उन लोगों पर रहमत और शफ़क़त फरमाई। एक दूसरी रिवायत में उस्मान बिन तल्हा खुद बयान करते हैं कि ज़माना-ए-जाहिलियत में सोमवार और गुरुवार के दिन हम काबा खोला करते थे। एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और कुछ लोगों के साथ काबा के अंदर जाना चाहा। इस पर मैंने आपसे सख्त कलामी की, लेकिन आपने बहुत नर्मी से कलाम किया और फ़रमाया:

"हे उस्मान! एक दिन यह चाबी तुम मेरे हाथ में देखोगे, और मैं जिसे चाहूँगा, यह दूँगा।"

आज वह दिन था। यह सारी बातें उस्मान को भी याद आ रही होंगी, और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उस दिन को नहीं भुले होंगे, लेकिन आपने उससे फ़रमाया: "ऐ उस्मान! अपनी चाबी संभालो।" इसके बावजूद आपने उसे यही कहा कि लो, चाबी मैं तुम्हें देता हूँ आज। आज नेकी और वफ़ा का दिन है। यह चाबी हमेशा के लिए ले लो, तुमसे सिर्फ़ ज़ालिम ही इसे छीनेगा।

(सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, डॉ. सलाबी, जिल्द 3, पेज 415-416, दारुस्सलाम) (तारीखुल खमीस, जिल्द 2, पेज 482, 487, 488, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

अब यह तुम्हारे ख़ानदान में रहेगी। चुनाँचे आज तक काबा की चाबी उसी ख़ानदान में नस्ल दर नस्ल चली आ रही है।

रिवायत है कि फ़त्ह-ए-मक्का के दूसरे दिन बनू खुज़ाअह ने बनू हुज़ैल के एक मुशरिक आदमी को क़त्ल कर दिया, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुहर के बाद खुत्बा देने के लिए खड़े हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी कमर काबा से लगाए हुए थे, वहाँ टेक लगाए हुए थे, और एक रिवायत है कि आप अपनी ऊँटनी पर सवार हुए। अल्लाह तआला की हम्द-ओ-सना बयान की और फ़रमाया:

"ऐ लोगो! अल्लाह तआला ने मक्का को उस दिन से हरम बनाया है, जिस दिन उसने आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ की, और जिस दिन उसने सूरज और चाँद को बनाया, और यह दो पहाड़ सफा और मरवा नस्ब किए। इसे लोगों ने हरम नहीं बनाया।"

आपने फ़रमाया: "इसे लोगों ने हरम नहीं बनाया, बल्कि अल्लाह तआला ने बनाया है। यह क़यामत तक हरम है। फिर जो शख़्स अल्लाह तआला पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसके लिए हलाल नहीं कि वह इसमें ख़ूनरिज़ी करे और न इसका दरख़्त काटे। यह न मुझसे पहले किसी के लिए हलाल हुआ और न मेरे बाद किसी के लिए हलाल होगा। मेरे लिए यह घड़ी भर के लिए हलाल हुआ था, फिर इसकी हुरमत वैसे ही लौट आई है, जैसे कल थी। तुम में से हाजिर ग़ाइब तक पहुँचा दे कि जो तुमसे कहे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसमें क़ताल किया था, तो उसे कहो कि अल्लाह तआला ने इसे अपने रसूल के लिए हलाल किया था और उसने तुम्हारे लिए हलाल नहीं किया। ऐ लोगो! लोगों में से अल्लाह तआला पर सबसे ज़्यादा जुर्रत करने वाला वह शख़्स है जिसने हरम में क़त्ल किया या अपने क़ातिल के अलावा किसी और को क़त्ल किया या ज़माना-ए-जाहिलियत के ख़ून के बदले की वजह से क़त्ल किया।"

"ऐ बनू ख़ुज़ाअह! क़त्ल से हाथ रोक लो। तुमने एक शख़्स को क़त्ल किया है, मैं उसकी दीत अदा करूँगा।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मैं दूँगा अब उसकी दीत, मुआहिदा है। जो मेरी ज़मानत के बाद किसी को क़त्ल करेगा, तो उसके अहल को दो इख़्तियार होंगे: अगर वह चाहें तो दीत ले लें और अगर चाहें तो उसे क़त्ल कर दें।"

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस शख़्स की दीत एक सौ ऊँट दे दी, जिसे बनू ख़ुज़ाअह ने क़त्ल किया था। उनकी तरफ से आपने दीत अता फरमाई।

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पेज 256-257, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

उन्हीं दिनों में फ़ज़ाला बिन उमैर का आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने का नापाक मंसूबा भी ज़ाहिर हुआ। इसकी तफ़सील में लिखा है कि फ़त्ह-ए-मक्का के दिन बहुत से ऐसे लोग भी थे जो अंदर ही अंदर पेच-ओ-ताब खा रहे थे, लेकिन वह बेबस थे। यही वजह है कि मक्का के कुछ दिलेर नौजवानों जैसे इकरिमा वग़ैरह ने बाक़ायदा एक पलटन बना कर एक जगह खड़े होकर मुसल्लह मुक़ाबले भी की थी। इसी तरह की सोच रखने वालों में से एक शख़्स फ़ज़ाला बिन उमैर भी था। यह कहता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काबा का तवाफ़ कर रहे थे, तो मैं भी उस भीड़ में शामिल हो गया और सोचा कि जैसे ही मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब हुआ, तो चुपके से अपने खंजर से वार करके आपको क़त्ल कर दूँगा। वह इस इरादे से आपके पीछे-पीछे हो लिया। जैसे ही वह आपके क़रीब हुआ, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखकर फ़रमाया: "तुम फ़ज़ाला हो?"

उसने कहा: "जी हाँ।"फ़रमाया: "दिल में क्या सोच रहे हो?"कहने लगा: "मैं अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हूँ।"

उसने झूठ बोला। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया: "अल्लाह से इस्तिग़फार करो। तुम जो कह रहे हो, वह तुम नहीं कर रहे।"

और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके क़रीब आए और उसके सीने पर हाथ रखा।

फ़ज़ाला बयान करते हैं कि बिल्लाह, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सीने से हाथ नहीं उठाया था कि दुनिया में सबसे ज़्यादा माहबूब मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही लगने लगे, और वह अपने घर वालों की तरफ वापस लौट आया।

(सुबुलुल हुदा (मुतरजिम), जिल्द 5, पेज 232, ज़ाविया पब्लिशर्स, लाहौर) (तारीखुल खमीस, जिल्द 2, पेज 487, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (उद्धृत दायर मारीफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 9, पेज 170, बज़्म-ए-इक़बाल, लाहौर) (फ़त्ह-ए-मक्का, बाशमील, पेज 241-242, नफ़ीस एकेडमी, करांची)

वह इस इरादे से गया था, लेकिन इसके बाद उसका हृदय परिवर्तन हो गया।

उन्हीं दिनों में हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पिता के इस्लाम कबूल करने की घटना का भी वर्णन मिलता है। हज़रत अबू बक्र के पिता फ़त्ह-ए-मक्का तक ईमान नहीं लाए थे। उस समय उनकी आँखों की रोशनी जा चुकी थी। फ़त्ह-ए-मक्का के समय जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हरम में दाखिल हुए, तो हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) अपने पिता को लेकर आँहज़रत की सेवा में हाज़िर हुए। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखा, तो आपने फ़रमाया: "ऐ अबू बक्र! तुम इस बुज़ुर्ग व्यक्ति को घर पर ही रहने देते। इतनी बड़ी उम्र के आदमी को मेरे पास ले आए हो। मैं खुद उनके पास चला आता।" इस पर हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! यह इस बात के ज़्यादा हक़दार हैं कि आपकी सेवा में हाज़िर हों, न कि आप उनके पास तशरीफ़ ले जाएँ।" हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने बैठाया, तो आपने उनके सीने पर हाथ फेरा और फ़रमाया: "इस्लाम कबूल कर लें। आप सलामती में आ जाएँगे।" चुनाँचे उन्होंने (हज़रत अबू बक्र के पिता ने) इस्लाम कबूल कर लिया।

(अल-इसाबा फी तमीज़िस सहाबा, जिल्द 4, पेज 374-375, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पेज 232-233, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

एक वर्णन हज़रत उम्मे हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा) के घर में आपके भोजन ग्रहण करने का भी मिलता है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़त्ह-ए-मक्का के दिन हज़रत उम्मे हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा) से फ़रमाया: "क्या तुम्हारे पास कोई भोजन है जिसे हम खाएँ?" उन्होंने अर्ज़ किया: "सूखी हुई रोटी के टुकड़ों के अलावा कुछ नहीं है, और मुझे शर्म आती है कि मैं उन्हें आपकी सेवा में पेश करूँ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उन्हें ही ले आओ।" आपने उन्हें पानी में भिगोया। वह नमक ले आईं। आपने फ़रमाया: "क्या कोई शोरबा है?" उन्होंने कहा: "या रसूलल्लाह! मेरे पास सिरके के अलावा और कुछ नहीं है।" आपने फ़रमाया: "वह सिरका ले आओ।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे भोजन पर डाला और उसमें से खाया, और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया। फिर फ़रमाया: "सिरका कितना उम्दा सालन है। ऐ उम्मे हानी! जिस घर में सिरका मौजूद हो, वह ग़रीब नहीं होता।"

(सुबुलुल हुदा, जिल्द 5, पेज 235, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

शुक्रगुज़ारी की भी इंतिहा है और उम्मे हानी की दिलजोई भी कर दी। यह फ़ातिह-ए-मक्का का हाल है, जबकि हर घर से सब कुछ मयस्सर आ सकता था, लेकिन आपने उन छोटे-से सूखे रोटी के टुकड़ों पर ही उस समय गुज़ारा किया।

आपके मक्का पहुँचने और वहाँ हर चीज़ को ख़ास तौर पर काबा को मोहब्बत से देखने से अंसार के दिल में एहतियात पैदा हुआ कि कहीं आप यहीं न रह जाएँ। मशहूर मिसाल है कि "इश्क है और हज़ार बदगुमानियाँ" यानी एक मोहब्बत होती है और उसके साथ हज़ार शक-ओ-शुबहात होते हैं। मोहब्बत करने वाला हर वक्त अपने माहबूब के बारे में फिक्रमंद रहता है। इश्क-ओ-मोहब्बत और हुस्न-ओ-वफ़ा के बहुत से मंज़र फ़त्ह-ए-मक्का के मौके पर देखे गए। इनमें से एक बहुत ही पाकीज़ा और पुर-लुत्फ़ नज़ारा मदीना के अंसार की तरफ से देखने में आया।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और मक्का में दाखिल हुए। आप हजर-ए-अस्वद की तरफ आए और उसे इसतलाम किया, यानी हजर-ए-अस्वद को बोसा दिया। फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। फिर सफा पर चढ़े, जहाँ से आप बैतुल्लाह को देख रहे थे, और आपने दोनों हाथ उठाए और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का ज़िक्र करने लगे, जितना अल्लाह तआला ने चाहा कि आप उसका ज़िक्र करें और उससे दुआ माँगते रहें। अंसार आपके नीचे थे। आपने दुआ की और अल्लाह की हम्द की और दुआ की, जितना उसने चाहा कि दुआ करें।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल मनासिक, बाब फी रफ़अल यद इज़ा रअल बैत, हदीस 1872)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मसरूफ़ियात और अहाले मक्का से हुस्न-ए-सुलूक के नाक़ाबिल-ए-यक़ीन मंज़र देखते हुए अंसार अपनी ही सोच में गुम हो गए। वह एक-दूसरे से कहने लगे कि आप पर अपने वतन की मोहब्बत और अपने क़बीले की मोहब्बत ग़ालिब आ गई है, और शायद अब आप यहीं अपनी बस्ती में अपने अज़ीज़ रिश्तेदारों में रह जाएँगे। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जुदाई का सोचते ही वह ग़मज़दा हो गए।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब अंसार की यह हालत थी, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर इस दौरान वह्य नाज़िल हुई। और जब वह्य आती थी, तो हम पर मख़फ़ी नहीं रहती थी। फिर जब वह आई, तो हम में से कोई भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ नज़र नहीं उठाता था, यहाँ तक कि वह्य ख़त्म हो गई। और जब वह्य ख़त्म हुई, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ऐ गिरोहे अंसार!" उन्होंने कहा: "या रसूलल्लाह! हाज़िर हैं।" आपने फ़रमाया: "तुम यह सोच रहे हो कि इस शख़्स पर वतन की मोहब्बत ग़ालिब आ गई है?" उन्होंने कहा: "ऐसा ही है।" आपने फ़रमाया: "अगर ऐसा हुआ, तो मेरा नाम क्या होगा? मैं मुहम्मद हूँ। अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ। मैंने अल्लाह की ख़ातिर तुम्हारी तरफ हिज्रत की थी। अब मेरा जीना-मरना तुम्हारे साथ ही है।" इस पर वह बे-इख़्तियार रोते हुए आपकी तरफ बढ़े और कहने लगे: "अल्लाह की क़सम! हमने जो भी कहा, वह अल्लाह और उसके रसूल की शदीद मोहब्बत और आपसे जुदाई के डर की वजह से कहा था।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यक़ीनन अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारी इस बात की तस्दीक़ करते हैं और तुम्हारा उज़्र क़बूल करते हैं।"

(सहीह मुस्लिम (मुतरजिम), किताबुल जिहाद वस्सैर, बाब फ़त्ह-ए-मक्का, जिल्द 9, पेज 185-189, हदीस 3317-3318)

इस वाक़िए का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ियारत-ए-काबा की मुताल्लिक़ इबादतों में मसरूफ़ थे और अपनी क़ौम के साथ बख़्शिश और रहमत का मुआमला कर रहे थे, तो अंसार के दिल अंदर ही अंदर बैठे जा रहे थे, और वह एक-दूसरे से इशारों में कह रहे थे: शायद आज हम ख़ुदा के रसूल को अपने से जुदा कर रहे हैं, क्योंकि उनका शहर ख़ुदा तआला ने उनके हाथ पर फ़त्ह कर दिया है, और उनका

क़बीला उन पर ईमान ले आया है। उस वक़्त अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्य के ज़रिए अंसार के इन शुबुहात की ख़बर दे दी। आपने सर उठाया, अंसार की तरफ देखा और फ़रमाया: 'ऐ अंसार! तुम समझते हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने शहर की मोहब्बत सताती होगी और अपनी क़ौम की मोहब्बत उसके दिल में गुदगुदियाँ लेती होगी?' अंसार ने कहा: 'या रसूलल्लाह! यह दुरुस्त है, हमारे दिल में ऐसा ख़्याल गुज़रा था।' आपने फ़रमाया: 'तुम्हें पता है, मेरा नाम क्या है?' मतलब यह कि मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल कहलाता हूँ। फिर किस तरह हो सकता है कि तुम लोगों को, जिन्होंने दीन-ए-इस्लाम की कमज़ोरी के वक़्त में अपनी जानें कुर्बान कीं, छोड़कर किसी और जगह चला जाऊँ। फिर फ़रमाया:

'हे अंसार! ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ। मैंने ख़ुदा की ख़ातिर अपने वतन को छोड़ा था, और उसके बाद अब मैं अपने वतन में वापस नहीं आ सकता। मेरी ज़िंदगी तुम्हारी ज़िंदगी से है, और मेरी मौत तुम्हारी मौत से वाबस्ता है।'

मदीना के लोग आपकी यह बातें सुनकर और आपकी मोहब्बत और आपकी वफ़ा को देखकर रोते हुए आगे बढ़े और कहा: 'या रसूलल्लाह! ख़ुदा की क़सम! हमने ख़ुदा और उसके रसूल पर बदज़न्नी की। बात यह है कि हमारे दिल इस ख़्याल को बर्दाश्त नहीं कर सकते कि ख़ुदा का रसूल हमें और हमारे शहर को छोड़कर कहीं और चला जाए।' आपने फ़रमाया: 'अल्लाह और उसका रसूल तुम लोगों को बरी समझते हैं और तुम्हारे इख़्लास की तस्दीक़ करते हैं।'

जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मदीना के लोगों में यह प्यार और मोहब्बत की बातें हो रही होंगी, अगर मक्का के लोगों की आँखों ने आँसू नहीं बहाए होंगे, तो उनके दिल यक़ीनन आँसू बहा रहे होंगे कि वह कीमती हीरा, जिससे बढ़कर कोई कीमती चीज़ इस दुनिया में पैदा नहीं हुई, ख़ुदा ने उनको दिया था, मगर उन्होंने उसे अपने घरों से निकालकर फेंक दिया, और अब वह ख़ुदा के फज़्ल और उसकी मदद के साथ दोबारा मक्का में आया था, वह अपनी वफ़ा-ए-अहद की वजह से अपनी मर्ज़ी और अपनी ख़ुशी से मक्का को छोड़कर मदीना वापस जा रहा है।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पेज 348-349)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक रिवायत है कि अबू सुफ़ियान ने आपको देखा। आप चल रहे थे और सहाबा आपके पीछे-पीछे चल रहे थे। उसने दिल में कहा कि काश मैं उनके साथ फिर क़िताल कर सकता और उनके लिए लश्कर जमा करता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। उनके सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया तब फिर अल्लाह तआला तुम्हें रसवा कर देगा। तुम यह सोच रहे हो कि क़िताल करते तो फिर रसवा हो जाते। उन्होंने कहा मैं अल्लाह के हुज़ूर तौबा करता हूँ और जो कुछ मैंने कहा, अल्लाह से उसकी माफ़ी चाहता हूँ। अब मुझे यक़ीन हो गया है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं। कहते हैं मैं तो अपने दिल में यह बात सोच रहा था। मैंने तो किसी को बताई ही नहीं थी और आपने वह बात मुझ पर ज़ाहिर कर दी।

(अल-लुलुअल्मक़्नून फी सीरतिन्नबी अल-मामून सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 4, पेज 63, रियाद 2013)(सुबुल अल-हुदा, जिल्द 5, पेज 246, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

खाना काबा की छत से ज़ुहर की अज़ान दी गई। जब नमाज़-ए-ज़ुहर का वक़्त हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) को हुक्म दिया। उन्होंने खाना काबा की छत पर चढ़कर अज़ान दी।

(सुबुल अल-हुदा, जिल्द 5, पेज 248, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

रिवायत है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस दिन तमाम नमाज़ें एक ही वुज़ू से अदा फरमाईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदत मुबारक थी कि बाल-उमूम हर नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ू फ़रमाते, लेकिन आज जब सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने आपको एक ही वुज़ू के साथ नमाज़ें पढ़ते देखा तो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आपने आज वह किया है जो आप नहीं किया करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उमर, मैंने जान-बूझकर ऐसा किया है।" उलमा ने इससे इस्तिदलाल किया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़रूरत के वक़्त ऐसा करने की सहूलियत की ख़ातिर यह नमूना दिया था।

(अल-लुलुअल्मक़्नून फी सीरतिन्नबी अल-मामून सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 4, पेज 64-65, रियाद 2013)

इस दौरान आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आम बैअत भी ली, जिसकी तफ्सील में लिखा है। हज़रत असवद बिन ख़ल्फ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि उन्होंने फत्ह-ए-मक्का के रोज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा। आप लोगों से बैअत ले रहे थे। आप क़र्न-ए-मसफ़लह के पास बैठ गए, जो मक्का के निचले हिस्से में एक चट्टान है, और इस्लाम पर लोगों से बैअत ली। छोटे-बड़े, मर्द और ख़वातीन आपकी ख़िदमत में आए।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे ईमान बिल्लाह और इस शहादत पर बैअत ली कि अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और रसूल हैं।

इब्ने जरीर तबरी बयान करते हैं कि लोग मक्का में जमा हो गए ताकि इस्लाम पर आपकी बैअत करें। आप कोह-ए-सफ़ा पर बैठ गए। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) नीचे थे। आप इस बात पर लोगों से बैअत ले रहे थे कि वह जहां तक संभव हो अल्लाह और उसके रसूल की बात सुनेंगे और इताअत करेंगे। जब मर्दों की बैअत से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों की बैअत ली। उन ख़वातीन में अबू सुफ़ियान की बीवी हिंद भी थी, जिसने नक़ाब कर रखा था। उसे ख़ौफ़ था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस सुलूक के बारे में पूछेंगे जो उसने हज़रत हम्ज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से किया था। उसे ख़दशा था कि इसकी वजह से उसकी गिरफ़्तारी न हो जाए। जब वह ख़वातीन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "इस अम्र पर मेरी बैअत करो कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराओगी। इस पर कि तुम चोरी नहीं करोगी।" हिंद ने कहा: "अल्लाह की क़सम! मैं अबू सुफ़ियान के माल से कभी-कभी कुछ ले लेती हूँ। मैं नहीं जानती कि यह मेरे लिए हलाल है या हराम।" अबू सुफ़ियान वहाँ मौजूद सुन रहे थे। उन्होंने कहा: "तुमने जो गुज़िश्ता माल लिया, वह तुम्हारे लिए हलाल है। अल्लाह तआला तुमसे दरगुज़र करे।" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिंद को पहचानते हुए फ़रमाया: "तुम हिंद बिन्ते उत्बा हो?" उसने कहा: "जी हाँ, लेकिन जो पहले हो चुका, उसे माफ़ फरमा दें।" मतलब यह कि इस्लाम और आपकी ज़ात मुबारक के ख़िलाफ़ जो कुछ मैंने किया, उससे दरगुज़र फ़रमाएँ। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम बदकारी नहीं करोगी।" हिंद ने कहा: "क्या आज़ाद औरत भी बदकारी करती है?" फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगी।" हिंद ने कहा: "हमने बचपन में उन्हें पाला, लेकिन बड़े हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बद्र के मौक़े पर क़त्ल कर दिया। आप जानें या वह।" यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) हँस पड़े। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम ऐसा बुहतान नहीं लगाओगी जिसे तुमने अपने सामने घड़ा हो।" हिंद ने कहा: "बुहतान लगाना बहुत बुरा फ़ेल है और बाज़ गुनाह उससे भी बुरे हैं।" फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम अम्र-ए-मारूफ़ में मेरी नाफ़रमानी नहीं करोगी।"

(अल-लुलुअल्मक़्नून फी सीरतिन्नबी अल-मामून सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 4, पेज 78-79, रियाद 2013)(सुबुल अल-हुदा, जिल्द 5, पेज 247-248, 295, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

एक रिवायत में यह है कि हिंद बिन्ते उत्बा को समझ आ गई कि वह गुमराही पर थी, तो अपने ख़ाविंद अबू सुफ़ियान को कहने लगी कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत करना चाहती हूँ। अबू सुफ़ियान ने हैरान होते हुए कहा: "आज तक तो तुम इनकार ही करती चली आई हो। यह अचानक इतनी बड़ी तब्दीली कैसे आ गई?" कहने लगी: "अल्लाह की क़सम! मैंने फत्ह-ए-मक्का वाले दिन मुसलमानों को मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इबादत करते हुए देखा है और सारी रात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी खाना काबा में इस तरह इबादत करते रहे कि कोई क़ियाम की हालत में था, कोई रुकू की और कोई सजदे की हालत में। इस तरह इबादत करते हुए मैंने आज तक किसी को नहीं देखा।" अबू सुफ़ियान ने कहा: "अपनी क़ौम के किसी आदमी के साथ जाना।" यानी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाना है तो अपनी क़ौम के किसी आदमी के पास जाना। चुनाँचे वह हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास गई और उनको साथ लेकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपने इस्लाम क़बूल करने का वाक़िया बयान किया।

इस्लाम क़बूल करने के बाद वह घर गई और जो बुत उसके घर में पड़ा था, उसे तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कहने लगी: "तेरी वजह से हम धोखे में पड़े रहे।"

(अल-इसाबा फी तमीज़िस्सहाबा, जिल्द 8, पेज 347, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(फत्ह-ए-मक्का, मुहम्मद बाशमील, पेज 311, नफ़ीस एकेडमी, कराची)

एक दूसरी रिवायत में है कि हिंद ने इस्लाम क़बूल करने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं और कहा: "सारी तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने अपने इस दीन को ग़ालिब किया जो उसने अपने लिए पसंद किया। क्या आपकी रहमत का कुछ हिस्सा मुझे भी मिल सकेगा? या रसूलल्लाह! मैं वह औरत हूँ जो अल्लाह तआला पर ईमान ले आई है और उसकी तस्दीक़ करने वाली है।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हें ख़ुश आमदीद हो।"

हिंद ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं रू-ए-ज़मीन के अहल-ए-ख़ैमा में से किसी के बारे में यह नहीं चाहती थी कि वह आपके ख़ैमे से ज़्यादा रसवा हो, लेकिन अब मुझे रू-ए-ज़मीन के सारे अहल-ए-ख़ैमा की इज़्ज़तों से आपकी इज़्ज़त ज़्यादा अज़ीज़ है।"

हज़रत हिंद ने इस्लाम लाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अपनी मुहब्बत और इख़्लास का इज़हार इस तरह किया कि दो कम उम्र बकरे भूनकर आपकी ख़िदमत में लौंडी के हाथ भिजवाए। लौंडी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आई और कहा कि मेरी मालकिन ने यह आपकी ख़िदमत में भेजे हैं। गोश्त भूनकर भेजा है और वह उज़्र करते हुए कह रही हैं, माफ़ी चाह रही हैं कि आजकल हमारी बकरियों के बच्चे कम हैं। इसलिए मैं सिर्फ़ दो भेज रही हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला तुम्हारी बकरियों और उनकी औलाद में बरकत डाले।" बाद में यह लौंडी कहती थी कि बिल्लाहि कि मैंने बकरियों और उनके बच्चों की इतनी कसीर तादाद देखी जो पहले नहीं देखी थी। हज़रत हिंद कहती थीं कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ के तुफ़ैल है।

(सुबुल अल-हुदा, जिल्द 5, पेज 255, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)(सीरतुल हलबिया, बाब-ए-ज़िक्र-ए-मग़ाज़ी, जिल्द 3, पेज 139, दार अल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

हज़रत मुस्लिह मौऊद (रहमतुल्लाह अलैहि) अबू सुफ़ियान की बीवी हिंद की बैअत का वाक़िया यूँ बयान फ़रमाते हैं: "यह वही औरत है जिसने हज़रत हम्ज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) का मुस्ला करवाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनासिब समझा कि उसे इस ज़ालिमाना फ़ेल और ख़िलाफ़-ए-इंसानियत हरकत की सज़ा दी जाए। उस वक़्त पर्दे का हुक्म नाज़िल हो चुका था। जब औरतें बैअत के लिए आईं तो हिंदा भी चादर ओढ़कर साथ आ गई और उसने बैअत कर ली। जब वह उस फ़क़रे पर पहुँची कि 'हम शिर्क नहीं करेंगी' तो चूँकि वह बड़ी तेज़ तबीयत थी, उसने कहा: 'या रसूलुल्लाह! हम अब भी शिर्क करेंगी?' आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले थे और हमने पूरी ताक़त और क़ुव्वत के साथ आपका मुक़ाबला किया। अगर हमारे खुदा सच्चे होते तो आप क्यों कामयाब होते? वह बिल्कुल बेकार साबित हुए और हम हार गए।' रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'हिंदा है?' आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी आवाज़ को पहचानते थे, आख़िर रिश्तेदार ही थी। हिंदा ने कहा: 'या रसूलल्लाह! अब मैं मुसलमान हो चुकी हूँ। अब आपको मुझे क़त्ल करने का इख़्तियार नहीं।' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हँस पड़े और फ़रमाया: 'हाँ, अब तुम पर कोई गिरफ़्त नहीं हो सकती।' ग़रज़ वह क़ौम जो समझती थी कि आपने सब खुदाओं को कूट कर एक खुदा बना लिया है, उनमें इतना तग़य्युर पैदा हो गया कि हिंदा जैसी औरत ने कहा कि क्या कोई कह सकता है कि खुदा एक नहीं।"

(अपने फ़राइज़ की अदायगी में रात-दिन मुन्हमिक रहो, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पेज 14-15)

बैअत के उन्हीं दिनों का एक वाक़िया मिलता है। एक शख़्स बैअत करने के लिए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रौब और जलाल से वह डर के मारे काँप रहा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे तसल्ली देते हुए फ़रमाया: "डरो नहीं," और इज़्ज़ो-इन्किसार का इज़हार करते हुए फ़रमाया: "मैं कोई बादशाह नहीं हूँ। मैं तो उस औरत का बेटा हूँ जो मक्का में सूखा गोश्त खाया करती थी।"

(अल-लुलुअल्मक्नून फी सीरतिन्नबी अल-मामून सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, जिल्द 4, पेज 83, रियाद 2013)(सुनन इब्ने माजा, किताबुल अत्इमा, बाबुल क़दीद, हदीस 3312)

वे अपराधी जिनके क़त्ल का हुक्म सदा हुआ, उनके बारे में लिखा है। तफ़्सील बयान करता हूँ, हालाँकि इस बारे में कुछ लोगों के तहम्मत भी हैं और वाक़ियात भी यही बताते हैं, क्योंकि जिन वजहात की बिना पर क़त्ल के हुक्म के बारे में बयान किया गया है, यह साफ़ तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अमल और तबीयत के ख़िलाफ़ है। बहरहाल पहले यह बयान कर देता हूँ कि कौन लोग थे। तारीख़ में कुछ जगह ज़िक्र हुआ है और बाद में इसके रद्द में भी बयान कर दूँगा।

इब्ने इश्हाक़ ने ज़िक्र किया है कि वह अफ़राद जिनके जराइम की बाबत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह जहाँ भी नज़र आएँ, उनको क़त्ल कर दिया जाए, वह आठ मर्द और छह औरतें थीं। यह फत्हुल बारी में लिखा है। सीरत-ए-हलबिया में लिखा है कि यह कुल ग्यारह अफ़राद थे। वाक़िदी ने लिखा है कि यह कुल दस अफ़राद थे, जिनमें छह मर्द थे और चार औरतें थीं।

(फत्हुल बारी, जिल्द 8, पेज 14, किताबुल मग़ाज़ी, हदीस नंबर 4280, आराम बाग़ कराची)(सीरतुल हलबिया, जिल्द 3, पेज 117, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)(किताबुल मग़ाज़ी, वाक़िदी, जिल्द 2, पेज 258, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)

बुख़ारी की शरह फत्हुल बारी में इन चौदह अफ़राद के नाम भी लिखे हैं, जिनमें अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल, अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह, इक़रिमा बिन अबी जहल, मिक़यस बिन सुबाबा, हब्बार बिन असवद आदि शामिल हैं।

(फत्हुल बारी, जिल्द 8, पेज 13, क़दीमी किताब ख़ाना, आराम बाग़ कराची)

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फत्ह-ए-मक्का के रोज़ चार मर्द और दो औरतों के अलावा सबको अमन दे दी। आप ने फ़रमाया: "उन्हें क़त्ल कर दो, चाहे वह काबा के परदों के साथ लटके हुए हों।"

(सुननुन नसाई, किताबुल मुहारिबा [तहरीमुद्दम], बाबुल हुक्म फिल मुरतद, हदीस: 4072)

एक रिवायत में यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फत्ह-ए-मक्का के रोज़ इन चार अफ़राद के अलावा सबको अमन दे दी थी, जिनमें अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल, मिक़यस बिन सुबाबा, अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह और उम्मे सारा थीं।

(अल-बिदाया वन निहाया, जिल्द 6, पेज 562, मक्तबा दार हिज्र, बेरूत)

एक सीरत निगार ने लिखा है कि जिन लोगों के क़त्ल को मुबाह करार दिया गया था, यानी जायज़ करार दिया गया था, उनमें से अक्सर को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माफ़ फरमा दिया था और सिर्फ़ कुछ ही लोग क़त्ल हुए थे, जिन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आम माफ़ी से पहले ही क़त्ल कर दिया गया था।

(फत्ह-ए-मक्का, बाशमील, पेज 261-262, नफ़ीस एकेडमी, कराची)

हज़रत मसीह-ए-मौऊद (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस हवाले से अपनी राय जो लिखी है, वह यह है कि:

"सिर्फ़ ग्यारह मर्द और चार औरतें ऐसी थीं, जिनकी निस्बत शदीद ज़ालिमाना क़त्ल और फसाद साबित था। वह गोया जंगी मुजरिम थे और उनके मुताल्लिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म था कि क़त्ल कर दिए जाएँ, क्योंकि वह सिर्फ़ कुफ़्र या लड़ाई के मुजरिम नहीं थे, बल्कि जंगी मुजरिम थे।" लेकिन "...उनमें से अक्सर को मुसलमानों की सिफारिश पर आप ने छोड़ दिया।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल कुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पेज 344, 349)

तो अक्सर उनमें से छोड़ दिए गए। हज़रत मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) बयान फ़रमाते हैं कि: "हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों और दूसरे लोगों पर बकुल्ली फत्ह पा कर और उनको अपनी तलवार के नीचे देख कर फिर उनका गुनाह बख़्श दिया और सिर्फ़ उन्हीं कुछ लोगों को सज़ा दी, जिनको सज़ा देने के लिए हज़रत अहदियत की तरफ़ से क़तई हुक्म वारिद हो चुका था।" जिनके बारे में अल्लाह तआला ने वाज़ेह तौर पर फरमा दिया था: "और बजुज़ उन अज़ली मलऊनों के हर एक दुश्मन का गुनाह बख़्श दिया।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, हिस्सा-ए-सोम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पेज 286-287, बाक़िया हाशिया नंबर 11)

जिन अफ़राद को क़त्ल किया गया था, तारीख़ में उनकी वजूहात भी बयान की गई हैं, जो कि बयान तो कर देता हूँ, लेकिन बहरहाल तसल्ली-बख़्श वजूहात नहीं हैं। जो पहला नाम लिखा है, अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल का है। उसने पहले इस्लाम क़बूल किया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका नाम अब्दुल्लाह रखा था और उसने मदीना की तरफ़ हिजरत की थी। आप ने उसे ज़कात लेने के लिए भेजा। उसके हमराह बनू खुज़ाअ में से एक शख़्स था, जो उसके लिए खाना बनाता था और उसकी ख़िदमत करता था। इन दोनों ने एक जगह पड़ाव डाला, जहाँ लोग इकट्ठे हो कर ज़कात दिया करते थे। इब्ने ख़तल ने खुज़ाइ शख़्स को हुक्म दिया कि वह खाना तैयार करे और ख़ुद दोपहर के वक़्त सो गया। जब जागा तो खुज़ाइ शख़्स सो रहा था। उसने

कुछ तैयार नहीं किया था। इब्ने ख़तल ने तलवार के साथ उसे क़त्ल कर दिया और इस्लाम से मुरतद हो कर मक्का भाग गया। यह अशआर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज्व बयान करता था। हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फत्ह-ए-मक्का के रोज़ मक्का में दाख़िल हुए। आप के सर पर ख़ुद था। आप ने उसे उतारा। एक शख़्स आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उसने कहा: "इब्ने ख़तल खाना काबा के परदों के साथ लटका हुआ है।" आप ने फ़रमाया: "उसे क़त्ल कर दो।"

दूसरा है मिक़यस बिन सुबाबा। उसने एक अंसारी सहाबी को शहीद करने के लिए इस्लाम क़बूल किया था। अंसारी सहाबी ने एक ग़ज़वा में मिक़यस के भाई को दुश्मन समझ कर ग़लती से क़त्ल कर दिया था। मिक़यस ने भाई की दियत भी ली और अंसारी सहाबी को शहीद भी कर दिया। फिर इस्लाम तर्क कर के मक्का वापस चला गया। हज़रत नुमैला बिन अब्दुल्लाह ने फत्ह-ए-मक्का के रोज़ उसे क़त्ल किया।

हुवैरिस बिन नुक़ैज़ है। यह लिखा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसके क़त्ल का हुक्मनामा जारी फ़रमाया, क्योंकि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुँचाता था। हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसे क़त्ल किया। एक सीरत निगार लिखता है कि हुवैरिस बिन नुक़ैज़ के क़त्ल की यही वजह मिलती है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ईज़ा पहुँचाता था, लेकिन उसके क़त्ल का सबब उसके अलावा कोई और है, क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने नफ्स के लिए इंतिक़ाम नहीं लेते थे।

फिर है हुवैरिस बिन तलातिल खुज़ाइ। यह शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज्व करता था। उसे भी हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने क़त्ल किया।

फिर इब्ने ख़तल की लौंडी क़रीना थी। उसे अरनब भी कहते थे। यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में हज्विया अशआर गाती थी। उसे क़त्ल कर दिया गया।

(सुबुलुल हुदा वर रशाद, जिल्द 5, पेज 223-225, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)(इम्ताउल अस्मा, जिल्द 1, पेज 399, दारुल कुतुबिल इल्मिया, बेरूत)(फत्ह-ए-मक्का, बाशमील, पेज 264-265, नफ़ीस एकेडमी, कराची)(अल-लुलुअल मक्नून, सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द नहम, पेज 157, दारुस्सलाम)

हालाँकि यह तादाद जिनको क़त्ल किया गया था, चौदह-पंद्रह तक मिलती है, लेकिन तहक़ीक़ पर मालूम होता है कि यह तादाद दुरुस्त नहीं है, क्योंकि जिन जराइम की वजह से उनको क़त्ल करने का ज़िक्र मिलता है, वह जराइम ख़ुद बताते हैं कि मुअर्रिख़ीन को ग़लती लगी है। अक्सरियत के जराइम यह बयान हुए हैं कि वह मुरतद हो गए थे या वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुख और तकलीफ़ पहुँचाया करते थे या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज्व किया करते थे। यह फ़र्द-ए-जुर्म बताती है कि यह बाद के ज़माने की सोच है, क्योंकि जब कुरआन-ए-करीम और सुन्नत-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इन्हिराफ़ करते हुए यह सोच पैदा हुई कि मुरतद की सज़ा क़त्ल है या तौहीन-ए-रिसालत की सज़ा क़त्ल है, तो यह बाद की सोचें हैं। पहले तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में यह होता ही नहीं था। जब कुरआन-ए-करीम से साबित होता है कि इरतिदाद की सज़ा क़त्ल नहीं है। जब कुरआन और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा-ए-हसना से साबित होता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुख देने, आप को ईज़ा पहुँचाने और आप के हज्व करने की सज़ा क़त्ल नहीं, तो साफ़ मालूम होता है कि फत्ह-ए-मक्का के मौक़े पर जिस-जिस को क़त्ल करने का हुक्म दिया गया था, यक़ीनी तौर पर उनका जुर्म कोई और होना चाहिए था। जंगी जुर्म जैसे हज़रत मसीह-ए-मौऊद (रहमतुल्लाह अलैह) ने लिखा है कि वह जंगी मुजरिम थे या वह क़ातिल थे और वह तो थे ही, लेकिन यह कि हज्व कर दिया या तौहीन की, यह ग़लत है।

फत्ह-ए-मक्का के मौक़े पर क़त्ल किए जाने की इन रिवायात पर जर्ह करते हुए बर-ए-सग़ीर के एक मअरूफ सीरत निगार अल्लामा शिब्ली नोमानी लिखते हैं कि अरबाब-ए-सियर का बयान है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हालाँकि अहल-ए-मक्का को अमन अता किया था, ताहम दस शख़्सों की निस्बत हुक्म दिया कि जहाँ मिलें, क़त्ल कर दिए जाएँ। उनमें से बाज़ मसलन अब्दुल्लाह बिन ख़तल, मिक़यस बिन सुबाबा ख़ूनी मुजरिम थे और क़िसास में क़त्ल किए गए। अगर उनको माना भी जाए तो यह दो क़ातिल थे, इसलिए क़त्ल किए गए, लेकिन मुतअद्दिद दूसरे जो हैं, ऐसे थे कि उनका सिर्फ़ यह जुर्म था कि वह मक्का में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सताया करते थे या आप के हज्व में अशआर कहा करते थे। आप को सताते थे या हज्विया अशआर कहते थे। उनमें से एक औरत इस जुर्म में क़त्ल की गई कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हज्विया अशआर गाया करती थी। यह कहा जाता है, लेकिन उन्होंने लिखा है कि मुहद्दिसाना तन्क़ीद की रू से यह बयान सहीह नहीं है। इस जुर्म का मुजरिम तो सारा मक्का था। अगर यही बात ली जाए कि हतक किया करते थे और निंदा वाले अशआर कहते थे, तो यह तो सारा मक्का यही करता था, फिर तो सारों को क़त्ल करना चाहिए था। क़ुरैश में से सिवाए दो-चार के कौन था जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त से सख़्त ईज़ाएँ नहीं दीं। जबकि उन्हीं लोगों को यह पंक्तियाँ सुनाई गई कि 'अंतुमुत तुलक़ाउ' कि तुम लोग आज़ाद हो। जिन लोगों का क़त्ल बयान किया जाता है, वह निस्बतन कम दर्जा के मुजरिम थे।

हज़रत आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) की यह रिवायत सिहा-सिता में मौजूद है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी से ज़ाती इंतिक़ाम नहीं लिया।

ख़ैबर में जिस यहूदी औरत ने आप को ज़हर दिया, उसकी निस्बत लोगों ने दरयाफ़्त भी किया कि उसके क़त्ल का हुक्म होगा, इरशाद हुआ कि नहीं। ख़ैबर के कुफ़रिस्तान में एक यहूदिया ज़हर दे कर रहमत-ए-आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल से जानबर हो सकती है, तो हरम में उससे कम दर्जा के मुजरिम अफ़व-ए-नबवी से कैसे महरूम रह सकते हैं। अगर दिरायत पर क़नाअत न की जाए तो रिवायत के लिहाज़ से भी यह वाक़िया बिल्कुल नाकाबिल-ए-एतेबार रह जाता है। अक़्ल से जाइज़ा न भी लें तो तब भी रिवायत ग़लत है, क्योंकि सहीह बुख़ारी में सिर्फ़ इब्ने ख़तल का क़त्ल मज़कूर है और यह साधारणतः मुसल्लम है कि वह क़िसास में क़त्ल किया गया था। मिक़यस का क़त्ल भी शरई क़िसास था। बाक़ी जिन लोगों की निस्बत हुक्म-ए-क़त्ल की वजह बयान की जाती है कि वह किसी ज़माने में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सताया करते थे, वह रिवायतें सिर्फ़ इब्ने इश्हाक़ तक पहुँच कर ख़त्म हो जाती हैं, यानी उसूल-ए-हदीस की रू से वह रिवायत मुन्क़ता है, जो काबिल-ए-एतेबार नहीं। सबसे ज़्यादा मोतबर रिवायत जो इस बारे में पेश की जा सकती है, वह अबू दाऊद की रिवायत है, जिस में मज़कूर है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फत्ह-ए-मक्का के दिन फ़रमाया कि चार शख़्सों को कहीं अमन नहीं दिया जा सकता। अबू दाऊद ने इस हदीस को नक़्ल कर के लिखा है कि इस रिवायत की सनद जैसी चाहिए, मुझ को नहीं मिली। अबू दाऊद की इन रिवायात के मुताल्लिक दूसरी कुतुब में भी लिखा है कि वह कमज़ोर हैं। इसमें शुबह नहीं कि बाज़ सरदारान-ए-क़ुरैश जो मुख़ालिफ़ीन-ए-इस्लाम के पेशरो थे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुन कर मक्का से भाग गए, लेकिन यह सिर्फ़ इब्ने इश्हाक़ का क़ियास है कि वह इस वजह से भाग गए थे कि उनके क़त्ल का हुक्म दिया गया था।

(माख़ूज़-ए-सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, शिब्ली, जिल्द-ए-अव्वल, पेज 350-351, मक्तबा इस्लामिया)

अलग़रज़ फत्ह-ए-मक्का के वक़्त सिर्फ़ कुछ एक अफ़राद के क़त्ल होने का फैसला हुआ था और वह वही थे जिनके बारे में हुक्म-ओ-अद्ल हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया है कि:

"सिर्फ़ उन्हीं कुछ लोगों को सज़ा दी जिन को सज़ा देने के लिए हज़रत अहदियत की तरफ़ से क़तई हुक्म वारिद हो चुका था।" यानी वह तीन-चार आदमी थे "और बजुज़ उन अज़ली मलऊनों के हर एक दुश्मन का गुनाह बख़्श दिया।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, हिस्सा-ए-सोम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पेज 287, बाक़िया हाशिया नंबर 11)

तो यह है इसकी हक़ीक़त। इसलिए यह कहना कि इतने आदमी जो क़त्ल किए गए थे, वह हज्व करते थे, तौहीन-ए-रिसालत थी, यह सब ग़लत बातें हैं। बाक़ी इंशाअल्लाह आइंदा बयान करूँगा।

दुनिया के हालात तो आप लोगों पर वाज़ेह हैं। दुआएँ करते रहें। इसके लिए पहले भी मैं कई मर्तबा कह चुका हूँ, कहता रहता हूँ। हंगामी हालात के लिए जो भी

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

मैं याददिहानी करवाता रहता था, पहले भी कई दफ़ा कह चुका हूँ कि:

"हंगामी हालात के लिए लोगों को कुछ महीनों का राशन घरों में रखना चाहिए जो रख सकते हैं।"

अब तो कुछ सरकारों ने भी अपने लोगों से कहा है कि तीन महीने का राशन रखें। अल्लाह तआला बहरहाल दुनिया पर रहम करे और जंग के ख़तरनाक, डरावने हालात से बचाए।

अब मैं कुछ मरहूमीन का ज़िक्र करूँगा। उनका जनाज़ा नमाज़ के बाद पढ़ाऊँगा।

इनमें पहली हैं अम्मतुन नसीर निगाहत साहिबा। राजा अब्दुल मलिक साहिब की अहलिया हैं। उनकी गुज़िश्ता दिनों में सत्तर वर्ष की उम्र में वफात हुई है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूमा मूसिया थीं। हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की पोती थीं। हज़रत नवाब अम्मतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हा की नवासी थीं। कर्नल मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहिब की बेटी थीं। अमेरिका में भी उन्होंने लंबा अर्सा गुज़ारा है। वहाँ दस वर्ष के करीब उनको लजना की बतौर सेक्रेटरी माल और सेक्रेटरी ज़ियाफ़त ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली।

उनकी बेटी आमना कहती हैं कि सदका देने में बहुत बाक़ायदा थीं, ख़ामोशी से दिया करती थीं और थोड़े-थोड़े अर्से बाद यह ख़ास तौर पर बकरा सदका दे कर ग़रीबों में बाँटा करती थीं। माली मदद भी किया करती थीं। घर भी बना के दिया ग़रीबों को।

कहती हैं एक रात उन्होंने ख़्वाब में देखा कि अपनी चूड़ियाँ उतार के अपनी ख़ाला को दे रही हैं, तो उन्होंने फ़ौरन वह सोने की चूड़ियाँ उनको ग़रीबों को देने के लिए दे दीं। बहुत मेहमाननवाज़ थीं। मुस्तहिक़ीन की भी बहुत मदद किया करती थीं। बड़ा हमदर्दी का जज़्बा था। यह कहती हैं कि मिज़ाहिया तबीयत थी, इसलिए लोग जानते नहीं हैं, लेकिन मैंने उनको देखा है कि रातों में शिद्दत से दुआ करती थीं कि हमारे घर का फ़र्श भी हिलने लग जाता था और मेहमाननवाज़ी तो ख़ास तौर पर उनकी सिफ़त थी। कहती हैं हमने ज़िक्र-ए-इलाही का तरीक़ा अम्मी से सीखा है। दरूद-ए-शरीफ़ हर वक़्त पढ़ती थीं और हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़्मों के शेर पढ़ती रहती थीं। हमने इतनी दफ़ा सुने हैं कि हमें ज़बानी याद हो गए हैं।

हमसायों, रिश्तेदारों से बड़ा हुस्न-ए-सुलूक करने वाली थीं। यह उनकी बेटी आयशा ने लिखा है।

उनके भांजे ने लिखा है कि ख़ामोशी से मदद किया करती थीं और अल्लाह तआला भी उनको बाज़ दफ़ा किसी शख़्स के बारे में मदद के लिए इत्तिला कर देता था। एक दफ़ा ख़्वाब में आप को बताया गया कि एक वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी की बेटी की शादी है, उसकी मदद करो, तो फ़ौरी तौर पर उसको एक लाख रुपए भिजवा दिया।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा जिसका वर्णन है, श्रीमान अल-हाज याक़ूब अहमद बिन अबूबक्र साहिब का है। यह अहमदिया सीनियर हाई स्कूल के साबिक़ हेडमास्टर हैं और नेशनल सेक्रेटरी तबलीग़ घाना थे। एक हादसे में तिरसठ वर्ष की उम्र में उनकी गुज़िश्ता दिनों वफात हो गई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम मूसी थे। मान्केसिम (Mankessim) - वहाँ एक शहर है - वहाँ जाते हुए एक ट्रॉलर से उनकी गाड़ी टकरा गई और वहाँ दिमाग़ी चोट लगी, इसकी वजह से यह वफात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। पसमांदगान में दो बीवियाँ, चार बच्चे, वालिदा, एक बहन और एक भाई शामिल हैं।

इब्तिदाई तालीम के बाद अहमदिया मिशनरी ट्रेनिंग कॉलेज साल्ट पॉन्ड में दाख़िला लिया और वहाँ से फ़ारिग़ हो कर फिर वह मुख़्तलिफ़ जगहों पर जमाती ख़िदमत पर मुतअय्यन हुए। फिर उनको जमात की तरफ़ से ही यूनिवर्सिटी ऑफ़ घाना में दाख़िल करवाया गया, जहाँ बिज़नेस एडमिनिस्ट्रेशन में उन्होंने डिग्री ली और वहाँ से डिग्री लेने के बाद उनको गवर्नमेंट सर्विस का ऑफ़र हुआ, लेकिन उन्होंने उससे इन्कार कर दिया। क्योंकि यह वाक़िफ़-ए-ज़िंदगी थे और वक़्फ़ की रूह के साथ उन्होंने हमेशा काम किया है, बावजूद इसके कि हुकूमत के स्कूल में चले गए। हुकूमत एड करती थी, लेकिन स्कूल जमात का ही था। बाद में तालीम हासिल करके वहाँ हेडमास्टर लग गए। सलागा (Salaga) और कुमासी (Kumasi) के अहमदिया स्कूलों में यह हेडमास्टर की हैसियत से काम करते रहे और वहाँ के लोग इंतज़ामिया भी और हुकूमत के अफ़सरान भी और तुलबा भी हमेशा उनको याद रखते हैं।

जैसा कि मैंने कहा कि नेशनल सेक्रेटरी तबलीग़ थे और अंसारुल्लाह में क़ायद-ए-तरबियत के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। इल्मी शख़्सियत थे। उनको तालीम के महकमे में बाज़ जो बड़ी कमेटियाँ होती हैं, उनमें उनके मेंबर बनने की तौफ़ीक़ मिली। CHASS के प्रेज़िडेंट थे, यानी कॉन्फ्रेंस ऑफ़ हेड्स ऑफ़ असिस्टेड सेकेंडरी स्कूल्स घाना के प्रेज़िडेंट थे। काउंसिल मेंबर थे KNUST के, यानी क्वामे न्क्रुमाह यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के काउंसिल मेंबर थे। बोर्ड मेंबर थे GTEC (घाना टेरिटरी एजुकेशन कमीशन) के। बोर्ड मेंबर थे WAEC (वेस्ट अफ़्रीकन एग्ज़ामिनेशन काउंसिल) के। सेक्रेटरी जनरल थे ACP के, जो कि अफ़्रीकन कॉन्फेडरेशन ऑफ़ प्रिंसिपल्स है, उसके सेक्रेटरी जनरल थे।

उनकी वफात पर साउथ अफ़्रीका की Eswatini प्रिंसिपल्स एसोसिएशन (EPA) ने गहरे दुख का इज़हार किया और यह लिखा कि बड़े उसूलपसंद थे और उनकी क़यादत बड़ी आला थी।

हमेशा यह कहते थे कि मेरी कामयाबियों का मर्कज़ दीन से वाबस्तगी और खिलाफ़त-ए-अहमदिया से ताल्लुक़ है। एक शफ़ीक़ शौहर, बाप और ख़ानदान के लिए ईमान, नज़्म-ओ-ज़ब्त और शफ़क़त की अलामत थे। रमज़ान में कई बार क़ुरआन-ए-करीम का दौर मुकम्मल करते थे। घर वालों को हमेशा इबादत की तरफ़ तवज्जोह दिलाते। उनकी तबीयत में जहाँ आला रंग की क़ायदाना सलाहियत थी, लेकिन वहाँ इन्किसारी भी साथ थी और बड़ी दियानतदारी से ख़िदमत करते थे। उनके बड़े भाई ने अहमदियत क़बूल की थी, उसके बाद उनके ख़ानदान में अहमदियत आई। उनके भाई अबूबक्र सईद लिखते हैं। उनको उनके वालिद ने मिशनरी ट्रेनिंग कॉलेज साल्ट पॉन्ड भिजवाया, जहाँ से उन्होंने तालीम हासिल की। फिर लोकल मिशनरी बने। फिर आहिस्ता-आहिस्ता तरक़्क़ी करते-करते उन्होंने अपनी फील्ड में जो भी जमाती और हुकूमती तौर पर अच्छा मक़ाम था, वह हासिल किया।

मेरे साथ घाना में क़याम के दौरान उनका बहुत करीबी ताल्लुक़ था। बड़ा दोस्ती का ताल्लुक़ था। बड़ा प्यार का ताल्लुक़ था और जो भी अहम काम होते थे और ऐसे काम जिनमें एतमाद की ज़रूरत हो, वह मैं उन्हीं से करवाया करता था। बड़ी काबिल-ए-एतमाद व्यक्ति थे और खिलाफ़त के बाद तो उनका मुझसे ऐसा ताल्लुक़ था जो आला इख़्लास के मियार को छू रहा था। जमात और खिलाफ़त के लिए बड़ी ग़ैरत रखने वाली व्यक्ति थे।

उनकी माता कहती हैं मेरा बड़ा फरमाबरदार बेटा था। बचपन से ही हमेशा मेरी देखभाल करता और हज्ज करने का अपना इरादा किया, लेकिन उससे पहले उसने कहा कि आप हज्ज करें और वालिदा को पहले हज्ज कराया, फिर ख़ुद हज्ज पर गए। कहती हैं कभी मुझे अकेला नहीं छोड़ा। हमेशा अपने साथ रखा।

अहलिया कहती हैं कि मुहब्बत करने वाले और ज़िम्मेदार शौहर थे। बच्चों के लिए शफ़ीक़ बाप थे और हमेशा यही तलक़ीन करते थे कि जमात के लिए क़ुरबानियाँ पेश करनी चाहिएँ।

उनके बेटे लिखते हैं कि हमेशा हमारे ईमान और अहमदियत को मज़बूत बुनियादों पर इस्तिवार किया। उन्होंने मज़हब से वाबस्तगी की अहमियत सिखाई और हर क़दम पर मार्गदर्शन किया और कहते हैं कि उनका ईमान हमारे पूरे ख़ानदान के लिए मशअल-ए-राह है। नमाज़-ए-फज्र, तहज्जुद के लिए भी हमें उठाते और रमज़ान में तो ख़ास तौर पर इसका ख़याल रखते और हर सोमवार और गुरुवार को रोज़ा रखते। कहते हैं उनका दिल बड़ा और इन्किसारी से भरा हुआ था। हर शख़्स से इज़्ज़त से पेश आते, चाहे वह उनका मातहत ही क्यों न हो। बड़े हंसमुख इंसान थे। उनके भाई सईद बिन अबूबक्र कहते हैं कि वालिद की वफात के बाद उन्होंने मेरी सरपरस्ती की और एक हक़ीक़ी वालिद की तरह उन्होंने मुझे पाला, मेरा ख़याल रखा, मेरी तरबियत की। नमाज़ों की तरफ़ तवज्जोह दिलाई और हर तरह मेरी ज़रूरतों को पूरा किया।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उन जैसा वफ़ाशआर और नेकियों में बढ़ने वाला बनाए।

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

"'व इज़ा-न्नुफूसु जुव्विजत' भी मेरे ही लिए है... फिर यह भी 'जमअ' है कि ख़ुदा तआला ने तबलीग़ के सारे सामान जमा कर दिए हैं। चुनांचे छापेखाने के उपकरण, काग़ज़ की बहुतायत, डाकख़ानों, तार, रेल और भाप के जहाज़ों के ज़रिये पूरी दुनिया एक शहर के समान हो गई है और फिर नित्य नई ईजादें इस 'जमअ' को और भी बढ़ा रही हैं, क्योंकि तबलीग़ के साधन जमा हो रहे हैं।

मा-शा अल्लाह, जैसे तुम सब वाकिफ़ात-ए-नौ मेरे सामने स्कार्फ ओढ़कर बैठी हो, तुम्हें दूसरी लड़कियों के लिए अनुकरणीय आदर्श होना चाहिए तुम्हारे नैतिक गुण, नमाज़ें, बातचीत और पहनावा भी। तुम्हारे वस्त्रों में लज्जा होनी चाहिए और सिर पर स्कार्फ ओढ़ा होना चाहिए। केवल बातें करने, नारे लगाने या तराने गाने से कुछ नहीं होता। वाकिफ़ात-ए-नौ को अपने आचरण से व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत इज़्ज़त देगा और मेरी मोहब्बत लोगों के दिलों में डाल देगा और मेरे सिलसिले को पूरी धरती पर फैला देगा और मेरे फ़िरक़े को सब फ़िरक़ों पर ग़ालिब करेगा और मेरे फ़िरक़े के लोग इस क़दर इल्म और मारिफ़त में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपने दलीलों और निशानों की वजह से सबका मुँह बंद कर देंगे। और हर एक क़ौम इस चश्मे से पानी पीएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहाँ तक कि ज़मीन पर मुहीत हो जाएगा।

26 अक्तूबर 2022 शुक्रवार
(द्वितीय भाग)

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला, सवा छह बजे मस्जिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ़ लाए जहाँ कार्यक्रम के अनुसार वाकिफ़ात-ए-नौ की कक्षा आयोजित की गई थी।

कार्यक्रम का आरंभ पवित्र क़ुरआन की तिलावत से हुआ जो अज़ीज़ा माहीन वराइच ने की और उसका उर्दू अनुवाद अज़ीज़ा तूबा ख़ुरशीद ने तथा अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़ा शाफ़िया बशीर अहमद ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद अज़ीज़ा फाएरा मुबीन ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक ऐसी दुआ सीखी थी जिसे मैं कभी भूलता नहीं। वह यह है:

"اللهم اجعلني اعظم شكرك وأكثر ذكرك واتبع نصحك وأحفظ وصيتك"

(मुस्नद अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 311)

"हे अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा बहुत अधिक शुक्र कर सकूं, बहुत अधिक तुझे याद कर सकूं, तेरी सदुपदेशों की अनुपालना करूं और तेरे आदेशों की रक्षा (अपने कर्मों से) कर सकूं।"

इसके पश्चात इस हदीस का अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़ा माहिदा जावेद सैफ़ी ने प्रस्तुत किया।

फिर अज़ीज़ा हम्दा इरफान ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित कथन मलफ़ूज़ात से प्रस्तुत किया:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"'व इज़ा-न्नुफूसु जुव्विजत' भी मेरे ही लिए है... फिर यह भी 'जमअ' है कि ख़ुदा तआला ने तबलीग़ के सारे सामान जमा कर दिए हैं। चुनांचे छापेखाने के उपकरण, काग़ज़ की बहुतायत, डाकख़ानों, तार, रेल और भाप के जहाज़ों के ज़रिये पूरी दुनिया एक शहर के समान हो गई है और फिर नित्य नई ईजादें इस 'जमअ' को और भी बढ़ा रही हैं, क्योंकि तबलीग़ के साधन जमा हो रहे हैं। अब 'फोनोग्राफ' से भी तबलीग़ का कार्य लिया जा सकता है और इससे बड़े अद्भुत काम निकलते हैं, अख़बारों और पत्रिकाओं का प्रकाशन... संक्षेप में, तबलीग़ के इतने साधन एकत्र हो चुके हैं जिनकी मिसाल किसी पिछले युग में नहीं मिलती।"

(अल-हकम, जिल्द 6, नंबर 30 ,43 नवंबर 1902)

इसके बाद अज़ीज़ा दानिया इफ़त अहमद ने इस उद्धरण का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया।

फिर अज़ीज़ा मलीहा जलाल लुक़मान ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ीं:

"दीन की नुसरत के लिए इक आसमां पर शोर है
अब गया वक़्त-ए-ख़िजाँ आए हैं फल लाने के दिन"

इसके पश्चात अज़ीज़ा हाला तारिक भट्टी ने हुज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया। फिर अज़ीज़ा लबीबा सईद, अज़ीज़ा इमामा लारीब और अज़ीज़ा हुमा मुनीर ने "एम. टी.ए हमारा ख़िलाफ़त से संबंध का माध्यम" के विषय पर एक प्रस्तुति दी।

इसके बाद अज़ीज़ा माहिम अहमद ने उर्दू में "मैं तेरी तबलीग़ को धरती के छोरों तक पहुँचाऊँगा" के शीर्षक पर भाषण दिया।

फिर अज़ीज़ा आलिया बिलाल राना, अज़ीज़ा अम्बर महमूद, अज़ीज़ा असमा यासीन और अज़ीज़ा फ़ातिमा ज़फ़र तनोली ने "टेक्सस शहर की सैर" शीर्षक से एक प्रस्तुति दी।

बाद में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान की।

एक वाकिफ़ा-नौ ने पूछा कि मेरे अब्बा चाहते हैं कि मैं मेडिकल पढ़ूं, इसी कारण बायोमेडिकल पढ़ रही हूँ जबकि मुझे वकील बनने का शौक है, तो ऐसे में क्या करना चाहिए?

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेडिकल पढ़ने का शौक पैदा करो क्योंकि हमें डॉक्टरों की ज़रूरत है, वकीलों की नहीं। तुम्हारे अब्बा जो कहते हैं वह सही कहते हैं।

उसी वाकिफ़ा-नौ ने दूसरा सवाल किया कि सबसे उत्तम आर्थिक व्यवस्था कौन सी है जैसे कि अमेरिका में पूंजीवाद (कैपिटलिज्म) है या समाजवाद (सोशलिज्म)?

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया:

सबसे उत्तम व्यवस्था इस्लामी वित्तीय प्रणाली है। इसके लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की किताब "इस्लाम का आर्थिक प्रणाली" पढ़ो जो तुम्हें विस्तार से जानकारी देगी। इसे दो शब्दों में या चार मिनट में नहीं समझाया जा सकता। इस्लामी प्रणाली न तो सोशलिज़्म है और न ही कैपिटलिज़्म। इसका मूल बिंदु यह है कि हर व्यक्ति की आवश्यकता पूरी की जाए। इसके लिए ज़कात है और अन्य कर

(टैक्स) हैं। शेष विवरण पुस्तक में पढ़ो।

एक वाकिफ़ा-नौ बच्ची ने बताया कि वह रब्वा से पोर्टलैंड जमाअत आई है और हुज़ूर-ए-अनवर की प्रेरणा पर 'बैतुल फ़ुतूह' के लिए कुछ आभूषण देना चाहती है। उसने कहा कि उसकी इच्छा है कि वह इन्हें हुज़ूर-ए-अनवर की सेवा में स्वयं पेश करे। हुज़ूर-ए-अनवर ने पूछा: "क्या नाम और पता लिख दिया है ताकि रसीद भेजी जा सके?" बच्ची ने उत्तर दिया: "जी, लिख दिया है।" इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया: "ठीक है।"

एक वाकिफ़ा-नौ ने पूछा कि हुज़ूर-ए-अनवर ने वाकिफ़-ए-नौ बच्चों को उर्दू सीखने की हिदायत दी है, लेकिन यहाँ तो सभी इजलास और इज्तिमा इंग्लिश में होते हैं।

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: इंग्लैंड में भी पहले ऐसा ही था, लेकिन अब हमने यह शुरू किया है कि70 प्रतिशत कार्यवाही इंग्लिश में और 30 प्रतिशत उर्दू में हो। पहले यह इसलिए था कि अधिकांश लोग इंग्लिश समझते थे और उर्दू बहुत कम लोग। लेकिन अब यहाँ प्रवासियों की बड़ी संख्या आ चुकी है, इसलिए यहाँ भी ऐसा किया जा सकता है। जब तक वे अच्छी तरह से इंग्लिश नहीं सीख लेते, तब तक उन्हें यह सुविधा मिलनी चाहिए। फिर भी, एक वाकिफ़ा-नौ को उर्दू आनी चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया:

मा-शा अल्लाह, जैसे तुम सब वाकिफ़ात-ए-नौ मेरे सामने स्कार्फ ओढ़कर बैठी हो, तुम्हें दूसरी लड़कियों के लिए अनुकरणीय आदर्श होना चाहिए तुम्हारे नैतिक गुण, नमाज़ें, बातचीत और पहनावा भी। तुम्हारे वस्त्रों में लज्जा होनी चाहिए और सिर पर स्कार्फ ओढ़ा होना चाहिए। केवल बातें करने, नारे लगाने या तराने गाने से कुछ नहीं होता। वाकिफ़ात-ए-नौ को अपने आचरण से व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

एक वाकिफ़ा नौ ने पूछा कि यदि कोई व्यक्ति बुरे कर्म करता हो, जैसे कि बैंक डकैती, लेकिन बाद में उसमें नेक परिवर्तन आ जाए, तो क्या वह स्वर्ग में जा सकता है?

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: अंतिम फ़ैसला तो अल्लाह तआला का है। अल्लाह ही जानता है कि कौन कहाँ जाएगा। लेकिन अल्लाह कहता है कि यदि कोई अपने आप को सुधार ले, अपने पापों से तौबा करे और अल्लाह की बातों को माने, तो अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा।

एक वाकिफ़ा-नौ ने पूछा कि सामान्यतः पुरुषों और महिलाओं के बीच पर्दा होता है, लेकिन हज के दौरान यह पर्दा नहीं होता इसकी क्या हिकमत (तात्पर्य) है?

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: हज एक ऐसी इबादत है जो पूरी एकाग्रता और ध्यान से की जाती है। कम से कम अल्लाह तआला तो यही चाहता है। पुरुष महिला की ओर न देखे और महिला पुरुष की ओर न देखे यही इसका एक कारण हो सकता है। लेकिन आजकल जो लोग हज पर जाते हैं, उनका कोई ईमान ही नहीं होता पता नहीं उनका हज भी स्वीकार होता है या नहीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु जब 13-1912 में हज पर गए तो उन्होंने बताया कि भारत से एक 25-24 वर्ष का युवक भी हज पर गया हुआ था, जो हज के दौरान दुआ करने की बजाय फिल्मी गीत गा रहा था। तो ऐसे लोग भी होते हैं। हज तो पूर्ण एकाग्रता और समर्पण मांगता है। यही कारण समझा जा सकता है। बाक़ी जो हमें बताया गया है, हमें वैसा ही करना है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में बिना पर्दे के, बिना दीवारों के, पुरुष आगे और महिलाएँ पीछे नमाज़ पढ़ा करती थीं वह भी एक समय था। पर्दा तो तुम्हारी सुविधा के लिए है। हज में महिलाओं के लिए पुरुषों की तरह एहराम नहीं होता, वे अपने वस्त्रों में भी हज कर सकती हैं।

एक वाकिफ़ा-नौ ने पूछा कि यदि आपका पति आपको बेपर्दगी के लिए कहे तो क्या करना चाहिए?

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: तुम स्वयं निर्णय लो कि अल्लाह की बात माननी है या पति की। जैसे मैंने अभी कहा है कि तुम्हारा वस्त्र लज्जापूर्ण होना चाहिए। लज्जा ईमान का हिस्सा है। पर्दे का आदेश अल्लाह का है वही मानना है। पाकिस्तान में कानून कहता है कि तुम खुद को मुसलमान न कहो और सलाम न करो, तो क्या अहमदी यह मानते हैं? बाकी सभी कानूनों को मानते हैं, परंतु इसको नहीं मानते क्योंकि यह अल्लाह के आदेश के विरुद्ध है। इसलिए तुम्हारा यह सिद्धांत होना चाहिए कि जो बात अल्लाह के आदेश से टकराए चाहे माता-पिता कहें, पति कहे या कोई भी कहे उसे नहीं मानना चाहिए।

वाकिफ़ात-ए-नौ की यह कक्षा सात बजकर दस मिनट तक जारी रही। अंत में हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस कक्षा में शामिल होने वाली वाकिफ़ात-ए-नौ बच्चियों को जायनमाज़ (नमाज़ की चटाई) भेंट की।

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार सवा सात बजे वाक़िफ़ीन-ए-नौ बच्चों की कक्षा शुरू हुई।

कार्यक्रम का आरंभ तिलावत-ए-क़ुरआन करीम से हुआ, जो अज़ीज़म जलीस अहमद ने की। इसका उर्दू अनुवाद अज़ीज़म बिलाल अहमद सिद्दीकी और अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़म ताहिर अहमद भट्टी ने पेश किया।

इसके बाद अज़ीज़म सैयद नवास अहमद ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस पेश की:

"अन्नल-मुअमिन फ़ी ज़माने-अल-क़ाइम वहुवा बिल्मशरक यरा अखाहु अल्लज़ी फील मगरिब, वकज़ाल्लज़ी फील मगरिब यरा अखाहु अल्लज़ी बिल्मशरक।"

(बिहार अल-अनवार, अल-जामे लि-दुरर अखबार-अल-अइम्मा अल-अज़हार शैख़ मुहम्मद बाक़िर अल-मजलसी, जिल्द 52, बाब फी सीरतिहि व अख़लाक़िहि व अस्हाबिहि, पृष्ठ 391, दार इहया-उत-तुरास-अल-अरबी, बेरूत, लेबनान)

"इमाम महदी के समय में, पूरब का मोमिन अपने उस भाई को देख सकेगा जो पश्चिम में होगा, और इसी तरह जो पश्चिम में होगा, वह अपने भाई को जो पूरब में होगा, देख सकेगा।"

इस हदीस का अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ीज़म उसामा सैफ़ी ने प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात अज़ीज़म राशिद अहमद वराइच ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण पढ़कर सुनाया:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "तजल्लियात-ए-इलाहिया" में लिखते हैं:

"ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार ख़बर दी है कि वह मुझे बहुत इज़्ज़त देगा और मेरी मोहब्बत लोगों के दिलों में डाल देगा और मेरे सिलसिले को पूरी धरती पर फैला देगा और मेरे फ़िरक़े को सब फ़िरक़ों पर ग़ालिब करेगा और मेरे फ़िरक़े के लोग इस क़दर इल्म और मारिफ़त में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपने दलीलों और निशानों की वजह से सबका मुँह बंद कर देंगे। और हर एक क़ौम इस चश्मे से पानी पीएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहाँ तक कि ज़मीन पर मुहीत हो जाएगा। बहुत सी रुकावटें पैदा होंगी और इम्तिहान आएँगे मगर ख़ुदा सबको बीच से हटा देगा और अपने वादे को पूरा करेगा। और ख़ुदा ने मुझसे मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे।

सो ऐ सुनने वालो! इन बातों को याद रखो। और इन भविष्यवाणियों को अपने संदूकों में महफ़ूज़ रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया, रूहानी खज़ाइन, कंप्यूटर संस्करण, जिल्द 20, पृष्ठ 410–409)

वाक़िफ़ीन-ए-नौ की कक्षा के दौरान, इसके बाद अज़ीज़म सोबान इक़बाल ने इस उद्धरण का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया।

फिर अज़ीज़म सैयद ओवैस अहमद, अज़ीज़म यासिर ख़ान और अज़ीज़म आशिर अहमद भट्टी ने "MTA" के शीर्षक से एक तराना पेश किया, जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद इस्माईल मुबारक अहमद ने प्रस्तुत किया।

इसके बाद अज़ीज़म ज़रयाब फ़ारूक़ ने अंग्रेज़ी भाषा में "MTA हमारा ख़िलाफ़त से संबंध का माध्यम" विषय पर भाषण दिया।

इसके पश्चात अज़ीज़म लबीद अहमद ने "MTA की अहमियत और बरकात" पर उर्दू में भाषण दिया।

फिर अज़ीज़म अर्सलान वलीद अहमद और अज़ीज़म तलाल मंसूर अहमद ने "MTA हमारा ख़िलाफ़त से संबंध का माध्यम है" विषय पर एक प्रस्तुति दी।

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान की।

हज़ूर-ए-अनवर ने पूछा:

"आप में से कितने हैं जो उर्दू समझ लेते हैं? जिन्हें थोड़ी बहुत उर्दू आती है या समझ लेते हैं वे बारी-बारी हाथ उठाएँ।"

फिर हज़ूर ने फ़रमाया: "वाक़िफ़ीन-ए-नौ को उर्दू सीखने की कोशिश करनी चाहिए।"

एक वाक़िफ़-ए-नौ बच्चे ने पूछा:

"मैं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की किताब बरकात-ए-ख़िलाफ़त पढ़ रहा था, जिसमें आपने फ़रमाया है कि हर क़ौम में एक समय आता है

जब वे सियासत में जाती हैं। लेकिन इस समय हमें सियासतदानों की ज़रूरत नहीं है, मगर शायद भविष्य में हो, तो उस वक़्त ख़लीफ़ा वक़्त बताएँगे। क्या अब वह समय आ गया है कि अहमदी सियासत में जाएँ?"

हज़ूर ने फ़रमाया:

"हाँ, बन सकते हैं लेकिन वाक़िफ़ीन-ए-नौ नहीं बन सकते। वाक़िफ़ीन-ए-नौ के लिए मैंने एक प्रोग्राम तय किया है कि जमाअत की क्या ज़रूरतें हैं। हमें इस वक़्त डॉक्टरों और शिक्षकों की ज़रूरत है। कुछ इंजीनियर और अकाउंटेंट्स की भी ज़रूरत है, लेकिन सबसे ज़्यादा डॉक्टरों और शिक्षकों की ज़रूरत है।

अगर किसी में सियासत में जाने या किसी और पेशे की ख़ुदाई क़ाबलियत है तो वह व्यक्तिगत तौर पर संपर्क कर सकता है। वैसे अहमदी सियासतदान मौजूद हैं। घाना में अहमदी मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट हैं। पाकिस्तान में 1974 के अहमदियत-विरोधी क़ानून से पहले भुट्टो की पार्लियामेंट में तीन-चार अहमदी मेंबर थे एक सीनेट के, और दो पंजाब असेंबली के। अमेरिका में जो अहमदी सियासत में दिलचस्पी रखते हैं वे सियासत में जा सकते हैं लेकिन पार्टी के चुनाव में एहतियात बरतनी होगी।"

एक वाक़िफ़-ए-नौ बच्चे ने पूछा:

"हज़ूर-ए-अनवर कैलिफ़ोर्निया कब तशरीफ़ लाएँगे?"

हज़ूर ने फ़रमाया: "जब अल्लाह लाएगा। देखेंगे कब आते हैं। एक बार तो आ ही चुका हूँ।"

एक वाक़िफ़-ए-नौ ने पूछा: "आपको ह्यूस्टन आकर कैसा लगा?"

हज़ूर ने फ़रमाया: "बहुत अच्छा है। ख़ूबसूरत नज़ारा है। ह्यूस्टन के इर्द-गिर्द सारा इलाक़ा ज़रई (खेती-बाड़ी वाला) है बाग़ हैं, बाड़े हैं अच्छी जगह है।"

एक वाक़िफ़-ए-नौ ने पूछा:

"जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका किस तरह अपने आप को सामूहिक रूप से बेहतर बना सकती है?"

हज़ूर ने फ़रमाया: "मैं अपने दौरे के अंत में आपको बता दूँगा।"

एक बच्चे ने पूछा:

"हज़ूर-ए-अनवर की अमेरिका के वाक़िफ़ीन-ए-नौ के लिए सबसे ज़रूरी नसीहत क्या है?"

हज़ूर ने फ़रमाया:

"क्या आप लोग मेरे ख़ुतबे सुनते हैं? मैंने दो वर्ष पहले कनाडा में एक ख़ुतबा दिया था वही वाक़िफ़ीन-ए-नौ का चार्टर है। उसमें इकतीस बिंदु थे उन पर अमल करो।

बाक़ी ये चार बातें याद रखो: पाँचों नमाज़ें बाक़ायदा पढ़ो।

जहाँ भी नमाज़ सेंटर या मस्जिद हो, वहाँ जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ो।

क़ुरआन करीम की तिलावत रोज़ाना करो।

अच्छे लड़कों से दोस्ती रखो और पढ़ाई पर ध्यान दो।

बाक़ी बातें उस ख़ुतबे से ले लो।"

एक वाक़िफ़-ए-नौ ने पूछा: "हमें बतौर वाक़िफ़-ए-नौ उच्च शिक्षा की तरफ़ ध्यान दिलाया जाता है, लेकिन अमेरिका में शिक्षा के लिए लिए गए क़र्ज़े का बोझ बहुत ज़्यादा है 1.5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच चुका है। इस सूरत में हज़ूर अहमदी बच्चों को क्या नसीहत देते हैं कि वे अपने वित्तीय मामलों को कैसे संभालें?"

हज़ूर ने फ़रमाया:

"उच्च शिक्षा सिर्फ़ वाक़िफ़ीन-ए-नौ के लिए नहीं, हर अहमदी के लिए ज़रूरी है। वाक़िफ़ीन को शिक्षा में सबसे आगे होना चाहिए।

जो लोग सरकार या बैंक से शिक्षा के लिए क़र्ज़ा लेते हैं, उन्हें मेरी नसीहत है कि वे जिस क्षेत्र में पढ़ाई कर रहे हैं उसी में नौकरी तलाशें, तीन वर्ष का अनुभव लें और क़र्ज़ चुकाएँ। जब क़र्ज़ पूरा हो जाए तब अपने आप को वक़्फ़ के लिए पेश करें लेकिन इस दौरान मरकज़ को अपनी तरक़्क़ी से अवगत कराते रहें।

साथ ही: पाँचों नमाज़ें जमाअत से पढ़ें। रोज़ाना तिलावत करें। अच्छे अख़लाक़ अपनाएँ।

अगर आप अस्पताल, कंपनी या वकील के तौर पर काम कर रहे हों, तो अपने बुनियादी फ़र्ज़ न भूलें।

ये सब साथ-साथ करना चाहिए। उसके बाद आगे की हिदायत ली जा सकती है।

तीसरी दुनिया या ग़रीब मुल्कों के छात्रों को उनकी उच्च शिक्षा के लिए हम ख़ुद भी क़र्ज़ देते हैं।"

एक वाक़िफ़-ए-नौ बच्चे ने पूछा:

"क्या आप पर सीधे अल्लाह तआला की तरफ़ से वही होती है?"

हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बता देता है कि क्या करना है दिल में बात डाल देता है। कोई सीधी वही नहीं होती। वही सिर्फ़ नबियों पर होती है।"

यदि आपको इस अनुवाद का किसी अन्य उद्देश्य के लिए संशोधित रूप चाहिए (जैसे प्रकाशित करने के लिए), तो बताइए मैं उसे उसी अनुसार ठीक कर दूँ।

वक़्फ़े नौ की यह क्लास आठ बजकर पंद्रह मिनट पर समाप्त हुई। अंत में हज़ूर-ए-अनवर ने इस क्लास में शामिल होने वाले सभी बच्चों को जानमाज़ (नमाज़ पढ़ने की चटाई) भेंट की। इसके बाद सभी बच्चों को हज़ूर-ए-अनवर के साथ एक समूह चित्र खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इसके पश्चात एक वाकिफ-ए-नौ नौजवान अज़ीज़म सैयद नवास अहमद ने अज़ान दी। हज़ूर-ए-अनवर उस समय मेहराब में खड़े रहे। अज़ान के बाद हज़ूर-ए-अनवर ने उस खादिम को पास बुला लिया और पूछा कि क्या कर रहे हो? इस पर नौजवान ने अर्ज़ किया कि डॉक्टर हूँ और रेज़ीडेंसी कर रहा हूँ। हज़ूर-ए-अनवर ने लोन के बारे में पूछा कि कितना क़र्ज़ है और कब तक अदा हो जाएगा। इस पर उन्होंने बताया कि कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे खिदमत के काम करें, रफ़ाह-ए-आम का काम करें तो क़र्ज़ एडजस्ट हो जाता है और कुछ मामलों में कम भी हो जाता है। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: "तो फिर घाना चले जाओ।"

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहल्लाहु तआला, ने मगरिब और इशा की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अपनी रहने के स्थान में तशरीफ ले गए।

27 अक्तूबर 2018, शनिवार

हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़, ने सुबह साढ़े छह बजे मस्जिद बैत-उस-समीअ में तशरीफ लाकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद हज़ूर-ए-अनवर अपने रिहाइशी हिस्से में तशरीफ ले गए।

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े दस बजे हज़ूर-ए-अनवर मस्जिद के मर्दाना हॉल में तशरीफ लाए, और वहां ह्यूस्टन जमाअत की निम्नलिखित मजालिस-ए-आमिला के सदस्यों ने हज़ूर-ए-अनवर के साथ समूह चित्र खिंचवाने की सआदत प्राप्त की:

लोकल मजलिस आमिला जमाअत एहमदिया ह्यूस्टन साउथ

मजलिस आमिला जमाअत ह्यूस्टन नॉर्थ

मजलिस आमिला जमाअत ह्यूस्टन सायप्रस

ह्यूस्टन जमाअत के वो वॉलंटियर्स जो विभिन्न विभागों में सेवा अंजाम दे रहे थे

तस्वीरों के इस कार्यक्रम के बाद हज़ूर-ए-अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ ले गए जहां तय कार्यक्रम के अनुसार फैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सेशन में 74 परिवारों के 396 अफ़राद ने हज़ूर-ए-अनवर के साथ मुलाक़ात की सआदत प्राप्त की। सभी ने अपने प्यारे आका के साथ तस्वीर खिंचवाने का भी सम्मान पाया। हज़ूर-ए-अनवर ने पढ़ाई कर रहे छात्रों और छात्राओं को क़लम भेंट किए और छोटे बच्चों को चॉकलेट्स भी अता फ़रमाई।

आज मिलने वाले ये परिवार अमेरिका की विभिन्न 28 जमाअतों से आए थे। ST. PAUL, जॉर्जिया, कैरोलाइना, फीनिक्स AZ, कैनसस सिटी, लास वेगस, मियामी, ऑरलैंडो, पोर्टलैंड, सिएटल, ज़ायन आदि से आए परिवारों और अहबाब ने लंबा और कठिन सफर तय करके हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

कुछ अहबाब और परिवारों ने 1182 मील का लंबा सफर साढ़े सत्रह घंटे में तय किया।

गाम्बिया से ताल्लुक़ रखने वाले एक दोस्त एबू जफो साहिब, जो इन दिनों अमेरिका में मिनेसोटा में रह रहे हैं, अपनी मुलाकात का हाल बयान करते हैं कि ये मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। मेरे पास अल्फ़ाज़ नहीं हैं कि इसे बयान कर सकूं। अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरी आवाज़ बंद नहीं हुई और मैं अपने प्यारे इमाम से

बात कर सका। मैंने हज़ूर-ए-अनवर के चारों ओर एक ख़ास रौशनी देखी। मैंने हज़ूर से अर्ज़ किया कि मेरा इंश्योरेंस का बिज़नेस है, इसके लिए कोई नाम तय फ़रमा दें। हज़ूर ने करम फ़रमाते हुए मेरे ही नाम पर उस बिजनेस का नाम रखने की तजवीज़ दी।

एक दोस्त, मुसव्विर राना साहिब जो जमाअत सैन एंटोनियो से आए थे, बयान करते हैं कि खलीफ़ा वक़्त से पहली बार मुलाक़ात ऐसा अनुभव है जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। एक अजीब सा सुकून महसूस कर रहा हूँ।

शुऐब अहसन साहिब जो ऑस्टिन जमाअत से मिलने के लिए आए थे, कहते हैं कि हज़ूर का दफ़्तर इलाही नूर से भरा हुआ था जिसे हर आंख देख सकती थी। मेरी पत्नी बहुत घबराई हुई थीं। हज़ूर-ए-अनवर ने उन्हें तसल्ली दी और फ़रमाया कि घबराने की कोई ज़रूरत नहीं। फिर मैंने अर्ज़ किया कि हमारा बेटा वाकिफ-ए-नौ है और हमारी ख्वाहिश है कि वह एक कामयाब मुबल्लिग़ और वाकिफ-ए-ज़िंदगी बने। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने करम फ़रमाते हुए हमारे बेटे से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि जब तुम ग्यारहवीं जमात में पहुंचो और तुम्हारा खुद का दिल करे कि तुम मुब्बी बनो, तो ज़रूर बनो। लेकिन अपने माँ-बाप के दबाव में मत आना बल्कि खुद फैसला करना कि क्या बनना है। अगर डॉक्टर बनना चाहो तो वो भी बन सकते हो, ये तुम्हारी अपनी पसंद है।

सबा रऊफ़ साहिबा अपनी फैमिली की हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात का हाल बयान करते हुए कहती हैं कि हज़ूर-ए-अनवर के दफ़्तर में दाख़िल होते ही जब मेरी नज़र हज़ूर के मुबारक चेहरे पर पड़ी, उस वक़्त से लेकर अब तक मेरे वजूद पर एक गहरी रक़्क़त तारी है। मैं हज़ूर से कुछ कह नहीं सकी। हज़ूर-ए-अनवर ने पहले मेरे बच्चों के सिर पर अपना शफ़क़त भरा हाथ रखा, फिर मुझे बुलाकर एक बेहद ही मुहब्बत करने वाले पिता की तरह मेरे सिर पर भी अपना मुबारक हाथ रखा। उस मंज़र को बयान नहीं कर पा रही। आंखों के सामने जब वो मंज़र आता है तो रो पड़ती हूँ। ऐसा महसूस होता है जैसे हज़ूर-ए-अनवर से मिलकर वक़्त थम सा गया और जैसे आज एक नई रूह खुदा ने हमारे अंदर फूंक दी हो। अपने आका के दीदार की जो तड़प बरसों से थी, वह आज पूरी हो गई।

उनकी 15 वर्षीय बेटी नूर-उल-इरफान रब्बानी कहती हैं कि जैसे ही मैं हज़ूर-ए-अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुई और उनके नूरानी चेहरे को देखा, उसी वक़्त से लेकर बाहर आने तक मेरी आंखों से लगातार आंसू बहते रहे। हज़ूर-ए-अनवर ने मुहब्बत और प्यार से मेरे भाई और बहन के सिर पर भी हाथ फेरा और हम तीनों को क़लम और चॉकलेट भी अता फ़रमाईं।

डैनियल ब्रुक साहिब, जो ऑस्टिन जमाअत से ताल्लुक रखते हैं, कहते हैं कि आज ज़िंदगी में पहली बार हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात हुई। मैंने ग्यारह वर्ष पहले अहमदियत क़बूल की थी। आज का दिन मेरी ज़िंदगी का एक अहम दिन था। मेरी ख़ुशी की कोई इंतिहा नहीं थी। चूंकि मैं अब रिटायर्ड हो चुका हूं, लिहाज़ा हज़ूर ने मुझे हिदायत फ़रमाई कि उर्दू और अरबी भाषा सीखो और अपनी रूहानियत की तरफ़ ख़ास तवज्जो दो।

एक दोस्त औसाफ़ मलिक साहिब बयान करते हैं कि हम मुलाक़ात से पहले बहुत ज़्यादा घबराए हुए थे लेकिन जैसे ही हज़ूर-ए-अनवर की खिदमत में हाज़िर हुए, सारी घबराहट खुद-ब-खुद दूर हो गई। मेरी बेटी के हाथ अब भी कांप रहे हैं लेकिन ये इस वजह से नहीं कि कोई डर है, बल्कि ये ख़ुशी की इंतिहा की वजह से हो रहा है।

एक साहिब महमूद असलम क़मर साहिब जो बे पॉइंट (कैलिफ़ोर्निया) से मिलने आए थे, कहने लगे कि मैं चार वर्ष पहले अपने परिवार के साथ अमेरिका हिजरत करके आया हूँ और आज हम कितने ख़ुशक़िस्मत हैं कि हमारी हज़ूर से मुलाक़ात हुई। जब हमने हज़ूर को क़रीब से देखा तो एक ऐसा दिलकश मंज़र था मानो अल्लाह के फ़रिश्तों ने ख़लीफ़ा वक़्त को घेरा हुआ था।

हसन ताहिर साहिब बयान करते हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त से मुलाक़ात के ये चंद लम्हे बेशक मेरी ज़िंदगी का निचोड़ और सबसे बेहतरीन लम्हात हैं।

खुर्रम शहज़ाद साहिब जो यूटा स्टेट से आए थे, मुलाक़ात के बाद कहने लगे कि हमने हज़ूर-ए-अनवर को सिर्फ़ टीवी पर देखा था। आज जब अपनी आंखों से सामने देखा तो ऐसा लग रहा था कि कोई ख़्वाब देख रहे हैं। अब भी यक़ीन नहीं आ रहा कि हज़ूर से मिलकर आए हैं। मैंने अर्ज़ किया कि हम रब्वा से आए हैं, इस पर हज़ूर ने फ़रमाया: "अल्लाह का शुक्र है कि आप ख़ैरियत से यहां पहुंच गए हैं। लेकिन अब हर मुमकिन कोशिश करनी है कि एक्टिव होकर जमाअत से ताल्लुक में रहना है।"

मुलाक़ात करने वाले एक दोस्त मिर्ज़ा मुहम्मद आरिफ साहिब बयान करते हैं कि हमारी हज़ूर से ये पहली मुलाक़ात थी। हालांकि मुलाक़ात मुख़्तसर थी लेकिन ऐसा महसूस हो रहा है जैसे हम एक ख़ज़ाना लेकर लौटे हैं। मेरा बेटा अभी बोलता नहीं है। मैंने हज़ूर से दुआ की दरख्वास्त की तो हज़ूर ने फ़रमाया कि मुहब्बत और शफ़क़त से इस बेटे से बात करते रहो, अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाएगा, इंशा'अल्लाह।

साउथ पैसिफ़िक के द्वीपीय मुल्क मार्शल आइलैंड्स से बहुत से अहमदी अहबाब हिजरत करके अमेरिका के सूबे अर्कांसस में आकर बसे हैं। आज वहां से अठारह अफ़राद पर मुश्तमिल एक वफ़्द 918 किलोमीटर का लंबा सफर सड़क द्वारा 12 घंटे में तय करके ह्यूस्टन पहुँचा था। इन खुशनसीब लोगों ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह का दीदार किया। उन्होंने हज़ूर की इमामत में नमाज़ें अदा कीं और जुमे की नमाज़ पढ़ने की भी तौफ़ीक़ पाई। ये लोग बुधवार की रात को ही ह्यूस्टन पहुंच गए थे। आज इनकी हज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात भी हुई। उनके इलाक़े के मुबल्लिग़ बताते हैं कि जब हज़ूर से मुलाक़ात का वक़्त क़रीब आया, उनके चेहरे ख़ुशी से दमकने लगे। मार्शलीज़ क़ौम के ये लोग आज पहली बार हज़रत मसिह मव'ूद अलैहिस्सलाम के चश्मे से सैराब हो रहे थे।

हज़ूर-ए-अनवर ने इन सभी का हाल जाना, उनसे बातचीत की और उनके हिजरत के बारे में पूछा। सभी को अपने आका के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य भी मिला।

मुलाक़ात के बाद एक महिला लिन एमलेक साहिबा कहने लगीं कि मुलाक़ात के दौरान मेरे लिए अपने जज़्बात पर क़ाबू पाना मुश्किल था। एक दूसरी महिला अर्लिन मिशन साहिबा ने अर्ज़ किया कि मुलाक़ात के दौरान मेरे आंसू जारी थे।

एक दोस्त रेनी लूथर साहिब कहने लगे कि आज ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात मेरी ज़िंदगी के सबसे ख़ूबसूरत लम्हात थे। एक साहिब एंटन मार्केज़ साहिब ने बताया कि मैं तो अपनी जगह साकित हो गया और हज़ूर के चेहरे को देखता रहा, कुछ भी कह नहीं सका।

आज की इस मुलाक़ात ने इन लोगों के ख़िलाफ़त के साथ ताल्लुक़ को बहुत मज़बूत कर दिया है। ये लम्हात उन्हें हमेशा याद रहेंगे। उनमें जो नया जोश और जज़्बा पैदा हुआ है, अब उसके ज़रिए इंशा'अल्लाह मार्शली क़ौम में तबलीग़ के नए रास्ते खुलेंगे।

इन लोगों ने यहां तीन से चार दिन क़याम किया। ये भी दूसरे अहमदियों की तरह उन रास्तों पर खड़े हो जाते जहाँ से हज़ूर-ए-अनवर मस्जिद या अपने दफ़्तर आते-जाते थे।

एक नई अहमदिया महिला अर्लिन ने अपने मुबल्लिग़ को बताया कि मैं भी रास्ते में हज़ूर के दीदार के लिए खड़ी थी। जब हज़ूर मेरे सामने से गुज़रे तो मेरे जिस्म पर सुकून तारी हो गया और ऐसा लगा कि मेरे क़दम रुक गए हैं और मैं चलना भूल गई हूँ। मेरे अंदर एक अजीब कैफ़ियत थी। एक ख़ास एहसास था जो मैं अपने अंदर महसूस कर रही थी।

मुलाक़ातों का ये कार्यक्रम तीन बजे तक जारी रहा।

.....(जारी है) ★ ★ ★

प्रार्थना की घोषणा

माननीय सुमित खान साहिब, जमाअत अहमदिया दिनौर, ज़िला भिवानी, हरियाणा, अपनी दो बहनों के लिए प्रार्थना की घोषणा करवाते हुए निवेदन करते हैं कि दोनों बहनों की शादी को कई वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन अभी तक वे संतान के सुख से वंचित हैं।

जमाअत के सभी लोगों से नेक, सालेह और मुत्तकी संतान प्राप्ति के लिए तथा माता-पिता की सेहत और सलामती के लिए दुआ का निवेदन है।

आज़ाद हुसैन इंस्पेक्टर बदर

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 14 August 2025 Issue No. 33

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

पृष्ठ 1 का शेष

का इरशाद था और आपके हाथ के लिए फ़रमाया "मा रमैता इज़ रमैता व लाकिन्नल्लाहा रमा"

(सूरह अनफाल: 18)। ग़रज़ नफ़्ल के ज़रिए इंसान बहुत बड़ा दर्जा और क़ुर्ब हासिल करता है यहाँ तक कि वह अल्लाह के वलियों (मित्रों) की श्रेणी में दाख़िल हो जाता है। फिर "मन आदा ली वलिय्यन फ़क़द बारज़तुहु बिल हर्ब" - जो मेरे वली का दुश्मन हो, मैं उससे कहता हूँ कि अब मेरी लड़ाई के लिए तैयार हो जा। हदीस में आया है कि अल्लाह उस शेरनी की तरह है जिसका बच्चा कोई उठा ले जाए तो वह उस पर झपटती है।

ग़रज़ इंसान को चाहिए कि वह इस मक़ाम के हासिल करने के लिए हमेशा कोशिश करता रहे। मौत का कोई वक्त मालूम नहीं है कि कब आ जाए। मोमिन को मुनासिब है कि वह कभी ग़ाफ़िल न हो और अल्लाह तआला से डरता रहे।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, सफ़्हा 80-81, एडिशन 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

"क़ू अंफुसकुम व अहलीकुम नारा" (सूरह अत-तहरीम, आयत 6)

यानी, "ऐ मेरे बंदो! न सिर्फ अपने आप को दोज़ख की आग से बचाओ, बल्कि अपने अहल-ओ-इयाल (परिवार) को भी आग से बचाओ।" तुम्हारा सिर्फ अपने आप को आग से बचा लेना काफी नहीं, बल्कि दूसरों को बचाना भी ज़रूरी है, क्योंकि अगर दूसरा नहीं बचेगा तो वह तुम्हें भी ले डूबेगा।

लेकिन यह बात याद रखनी चाहिए कि नमाज़ की पाबंदी कई रंग की होती है। सबसे पहला दर्जा, जिससे नीचे और कोई दर्जा नहीं, यह है कि इंसान बिल-इल्तिज़ाम (अनिवार्य रूप से) पाँचों वक्त की नमाज़ें पढ़े। जो मुसलमान पाँच वक्त की नमाज़ें पढ़ता है और उसमें कभी नागा नहीं करता, वह ईमान का सबसे छोटा दर्जा हासिल करता है।

दूसरा दर्जा नमाज़ का यह है कि पाँचों नमाज़ें वक्त पर अदा की जाएँ। जब कोई मुसलमान पाँचों नमाज़ें वक्त पर अदा करता है, तो वह ईमान की दूसरी सीढ़ी पर कदम रख लेता है।

तीसरा दर्जा यह है कि नमाज़ बा-जमाअत (समूह में) अदा की जाए। बा-जमाअत नमाज़ की अदायगी से इंसान ईमान की तीसरी सीढ़ी पर चढ़ जाता है।

चौथा दर्जा यह है कि नमाज़ के मतलब को समझकर अदा की जाए। जो शख्स तर्जुमा (अनुवाद) नहीं जानता, वह तर्जुमा सीखकर नमाज़ पढ़े, और जो तर्जुमा जानता हो, वह ठहर-ठहरकर नमाज़ को अदा करे, यहाँ तक कि वह समझ ले कि उसने नमाज़ को "कमा हक़्क़ह" (यथोचित रूप से) अदा कर लिया है।

पाँचवाँ दर्जा नमाज़ का यह है कि इंसान नमाज़ में पूरी मग्नता (एकाग्रता) हासिल करे, और जिस तरह गोताखोर समुद्र में गोता लगाते हैं, उसी तरह वह भी नमाज़ के अंदर गोता मारे, यहाँ तक कि वह दो में से एक मकाम हासिल कर ले:

या तो यह कि वह ख़ुदा को देख रहा हो,

या यह कि वह इस यक़ीन के साथ नमाज़ पढ़ रहा हो कि ख़ुदा तआला उसे देख रहा है।

इस दूसरी हालत की मिसाल ऐसी ही है, जैसे कोई अंधा बच्चा अपनी माँ की गोद में बैठा हो। अपनी माँ की गोद में बैठे हुए उस बेटे को भी तसल्ली होती है जो बिना (देखने वाला) हो और अपनी माँ को देख रहा हो, मगर माँ की गोद में बैठे हुए उस बेटे को भी तसल्ली होती है जो नाबिना (अंधा) हो इस ख्याल से कि हालाँकि वह अपनी नाबिनाई की वजह से माँ को नहीं देख रहा, मगर उसकी माँ उसे देख रही है।

रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं कि नमाज़ पढ़ते वक्त बंदे को इन दो में से एक मकाम ज़रूर हासिल होना चाहिए:

या तो यह कि वह ख़ुदा को देख रहा हो,

या यह कि उसका दिल इस यक़ीन से लबरेज़ हो कि ख़ुदा तआला उसे देख रहा है।

यह ईमान का पाँचवाँ मकाम है, और इस मकाम पर बंदे के फ़र्ज़ पूरे हो जाते हैं। मगर जिस बाम-ए-रिफ़अत (उच्च शिखर) पर उसे पहुँचना चाहिए, उस पर अभी नहीं पहुँचता।

(तफ्सीर-ए-कबीर, जिल्द 6, सफ़्हा 134-136, प्रकाशन कादियान 2010)

★ ★ ★

डॉक्टर (MBBS) पद हेतु विज्ञापन

नूर अस्पताल, कादियान

आवश्यक योग्यताएँ / शैक्षणिक योग्यता / अनुभव

उम्मीदवार ने MBBS की डिग्री रोटेटरी इंटर्नशिप सहित पूरी की हो।

किसी भी राज्य की मेडिकल काउंसिल में पंजीकृत हो।

किसी प्रतिष्ठित अस्पताल में कम से कम 2 वर्ष का अनुभव हो।

आयु 30 वर्ष से अधिक न हो।

(परिस्थितियों के आधार पर विशेष मामलों में छूट पर विचार किया जा सकता है।)

ग्रेड 20052-561-24540-784-33948-884-41020, नियमानुसार सुविधाएँ सहित।

उम्मीदवार स्वस्थ हो, उसकी धार्मिक व नैतिक स्थिति अच्छी हो, सभ्य हो तथा मरीजों व सहकर्मियों के साथ धैर्यपूर्ण व्यवहार रखता/रखती हो।

पुरुष उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाएगी।

आवश्यक निर्देश:

साप्ताहिक अखबार "बद्र" में प्रकाशित पिछले विज्ञापन के 2 महीने के भीतर प्राप्त आवेदनों पर ही विचार किया जाएगा।

इच्छुक उम्मीदवार अपने आवेदन प्रिंटेड फॉर्म पर ज़िला अमीर/स्थानीय अमीर/सदर जमाअत/मुबल्लिग इंचार्ज के सत्यापित हस्ताक्षर व मुहर के साथ प्रस्तुत करें।

इंटरव्यू में सफ़ल होने पर उम्मीदवार को नूर अस्पताल, कादियान में मेडिकल जाँच करानी होगी। सेवा के योग्य वही उम्मीदवार होगा जो अस्पताल के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ पाया जाए।

कादियान आने-जाने का यात्रा खर्च व मेडिकल सर्टिफिकेट का खर्च उम्मीदवार के स्वयं के जिम्मे होगा।

इंटरव्यू के समय मूल शैक्षणिक दस्तावेज साथ लाना अनिवार्य होगा।

नोट: इंटरव्यू की तिथि उम्मीदवारों को बाद में सूचित की जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

नज़रात दीवान सदर, अंजुमन अहमदिया कादियान, गुरदासपुर, पंजाब।

पिन कोड: 143516

मोबाइल: 9682587713, 9888232530, 9682627592

कार्यालय: 01872-501130

ईमेल: diwan@qadian.in

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad